KUDREMUKH

केआईओसीएल लिमिटेड

श्रीगंधा

केआईओसीएल लिमिटेड की
राजभाषा ई-पत्रिका

प्रवेशांक

स्वच्छ, स्वस्थ और हरित पर्यावरण के निर्माण में केआईओसीएल का निरंतर योगदान

पर्यावरण के लिए सदैव

सभी अंतर्राष्ट्रीय मानकों जैसे - आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015 एवं ओएचएसएएस 18001:2007 का अनुपालन करते हुए केआईओसीएल ने लौह अयस्क खनन, अनुलाभीकरण, पैलेटीकरण और फाउंड्री श्रेणी के पिग आयरन के निर्माण में 4 दशक से अधिक का सफ़र तय किया है। केआईओसीएल देश के लिए निरंतर मूल्यवान विदेशी मुद्रा अर्जित कर राज्य और केंद्र के राजकीय-कोष में योगदान दे रहा है।

केआईओसीएल राष्ट्रीय इस्पात नीति 2017 के अनुरूप वित्त वर्ष 2030 तक 300 मिलियन टन की इस्पात-क्षमता को प्राप्त करने के लिए एक सक्रिय भागीदार की भूमिका में है। केआईओसीएल ने कुद्रेमुख क्षेत्र में खान के बहाव एवं मिट्टी के कटाव की रोकथाम के लिए पहले ही 7.5 मिलियन से अधिक का पौधारोपण किया है। सीएसआर के अंतर्गत कंपनी, स्वास्थ्य, सामुदायिक विकास, शिक्षा, पेय-जल, स्वच्छता एवं स्वच्छ भारत-स्वच्छ विद्यालय अभियान हेतु पर्याप्त राशि व्यय कर रही है। केआईओसीएल एक शून्य उत्सर्जन कंपनी के रूप में लगातार पर्यावरण की दीर्घकालिकता के लिए भी योगदान कर रहा है।

पैलेट संयत्र

पैलेट स्टॉक यार्ड

पैलेट नौलदान

KUDREMUKH

केआईओसीएल लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

॥ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूरु - 560034

www.kioclltd.in

आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015 तथा ओएचएसएएस 45001:2018 कंपनी

इस्पाती इरादा से ही हर काम। हर काम देश के नाम।

राजभाषा गृह पत्रिका समिति

संरक्षक

श्री एम वि सुब्बा राव

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

मार्गदर्शक

श्री स्वपन कुमार गोराई

निदेशक (वित्त)

परामर्शदाता

श्री एस राजेंद्र

महा प्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

श्री एस रजनीश कुमार

उप प्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक

सुश्री चंदा रानी

हिंदी अधिकारी

संपादकीय सहयोग

श्री एम मुनीराजू

मास्टर तकनीशियन

रूपरेखा विन्यास

श्री टी वी शेखर

सहायक प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)

"हिंदी है जन-जन की भाषा, जन-जन के मन की अभिलाषा
सरल-सुबोध-सहज अभिव्यक्ति, निज भाषा हर मन की शक्ति"

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1	अध्यक्ष- सह- प्रबंध निदेशक – आशीर्वचन	05
2	निदेशक (वित्त) – उद्बोधन	06
3	महा प्रबंधक (मानव संसाधन) – संबोधन	07
4	संपादकीय	08
5	केआईओसीएल मिशन वक्तव्य	09
6	नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु हेतु केआईओसीएल की योगदान यात्रा	10
7	हिंदी पखवाड़ा वर्ष 2019 का समापन समारोह (रिपोर्ट)	14
8	एक दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी एवं कार्यशाला (रिपोर्ट)	16
9	नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु द्वारा अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव विशेष सम्मान समारोह	20
10	कार्यालयीन प्रयोग में हिंदी जरुरी क्यों है? (राजभाषा लेख)	21
11	समस्या का समाधान (बोधकथा)	24
12	पृथ्वी की आंतरिक संरचना के बारे में कुछ रोचक तथ्य (तकनीकी लेख)	25
13	भाषा का मानकीकरण एवं हिंदी (राजभाषा लेख)	27
14	हिंदी भाषा के बारे में कुछ दिलचस्प तथ्य	31
15	नेतृत्व का चमत्कार (बोधकथा)	32
16	केड्डस अर्थात धरती माता का पूजन (संस्कृति चर्चा)	33
17	ईश्वर की सर्वोत्तम कृति 'नर्स' (कविता)	34
18	यक्षगान (संस्कृति चर्चा)	35
19	परिवार (कविता)	36
20	प्रवासी (कविता)	36
21	स्वच्छता की युक्ति कोरोना से मुक्ति (कविता)	37
22	वातावरण (कविता)	38
23	सुख और दुख (कविता)	38
24	स्वच्छ भारत का संकल्प (कविता)	39
25	प्रकृति (कविता)	40
26	कोरोना (कविता)	40
27	देश के युवक (चिंतन)	41
28	फ़रियाद (कविता)	42
29	स्वच्छता का सार (कविता)	42
30	किसान और चट्टान (बोधकथा)	43
31	मास्ति वेंकटेश अय्यंगार (विरासत)	44

इस ई-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं। मौलिकता एवं अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे। संपादक मंडल / केआईओसीएल लिमिटेड से इसकी सहमति होना आवश्यक नही हैं।
नि:शुल्क एवं केवल आंतरिक वितरण के लिए।

एम वि सुब्बा राव
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

राजभाषा विभाग द्वारा नई पहल के रूप में जारी हो रहे 'श्रीगंधा' के इस प्रवेशांक के रुप में इस ई-अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। गृह पत्रिकाएं किसी भी संगठन के कार्मिकों को एक रचनात्मक मंच उपलब्ध कराती हैं जिसके माध्यम से वे अपनी लेखकीय प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। यह राजभाषा हिंदी में कार्य के लिए सशक्त वातावरण तैयार करने में भी महत्वपूर्ण योगदान करती हैं। इन पत्रिकाओं का एक अन्य योगदान समसामायिक चुनौतियों से निपटने के लिए सार्थक सूचनाओं का आदान प्रदान करना भी है। वर्तमान में वैश्विक महामारी कोविड-19 से निपटने की चुनौती का सामना भी पत्रिका के आलेख अपने तरीके से करने का रास्ता दिखा सकते हैं।

'श्रीगंधा' पत्रिका के प्रकाशन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हुए प्रत्येक केआईओसीएल कर्मी को धन्यवाद सहित आप सभी को सुरुचिपूर्ण पाठन की शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं के साथ!

एम वि सुब्बा राव

(एम वि सुब्बा राव)

स्वपन कुमार गोराई
निदेशक (वित्त)

'श्रीगंधा' के प्रवेशांक के माध्यम से आपसे रूबरू होते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। केआईओसीएल की अपनी गृह पत्रिका 'श्रीगंधा' के माध्यम से केआईओसीएल कर्मियों को अपनी रचनाओं को साझा करने का मंच मिलेगा। इस मंच का सार्थक इस्तेमाल हम अपनी समस्याओं के निवारण के साथ ही उपलब्धियों के प्रसार के लिए भी कर सकते हैं। इस मंच के माध्यम से हम अपनी गतिविधियों की चर्चा के साथ भविष्य की योजनाओं को तय कर सकते है। इस पत्रिका के माध्यम से अपना सरकारी कामकाज हमें राजभाषा हिंदी में पूरा करने की प्रेरणा भी मिलेगी। इसी सकारात्मक प्रेरणा के बल पर हम इस्पात विनिर्माण के अपने मूल उद्देश्यों की ही भांति संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति भी पूरी तरह सचेत और जागरूक रहकर कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करेंगे।

मुझे व्यक्तिगत तौर पर लगता है कि आज जब हम कारोबारी विकास के लिए ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों तक अपनी पहुँच बनाने के लिए लोकलाइजेशन अर्थात स्थानीय भाषाओं में अपने वस्तुओं और सेवाओं की विशेषता बताने की ओर अग्रसर हैं हिंदी में ज्यादा से ज्यादा काम हमारी सेवाओं के प्रसार के लिए बहुत जरूरी हो जाता है।

ई-पत्रिका के रूप में 'श्रीगंधा' के प्रवेशांक को प्रस्तुत करने के साथ ही साथ आप सभी से अपील है कि हममें से प्रत्येक अपने कार्यक्षेत्र में हिंदी में कार्य को बढ़ाने के लिए सदैव प्रयासरत रहे और पत्राचार विशेष तौर पर ईमेल से किए जाने वाले पत्राचार के लिए राजभाषा विभाग के समन्वय से मिशन मोड में हर संभव पहल करता रहे।

शुभकामनाओं सहित !

स्वपन

(स्वपन कुमार गोराई)

एस राजेंद्र
महा प्रबंधक (मानव संसाधन)

राजभाषा के सर्वकार्य प्रभारी के रूप में मेरा व्यक्तिगत तौर पर यह अनुभव रहा कि हिंदी भाषा में कामकाज से हम देश के हरेक कोने तक अपनी पहुँच बना सकते हैं। बाजार में ग्राहकों को समझ में आने वाली भाषा के रूप में आज हिंदी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की पहली पसंद है। अमेरिका में प्रचलित दक्षिण एशियाई भाषाओं में हिंदी सबसे लोकप्रिय है। देश विदेश में अपनी लोकप्रियता के दम पर आज हिंदी का प्रसार बढ़ा है।

केआईओसीएल में भी हम भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा प्रति वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने तथा समय-समय पर दिए जाने वाले निर्देशों के अनुपालन के द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में नई पहल करते रहते हैं।

केआईओसीएल की गृह पत्रिका 'श्रीगंधा' के प्रवेशांक को प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हिंदी से जुड़ी हुई रचनाओं के साथ इस अंक में हमने विविध सामग्रियों को प्रस्तुत किया है। हमारा यह प्रयास कैसा लगा इसे जानने की उत्सुकता रहेगी।

आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में शुभकामनाओं सहित!

एस राजेंद्र
(एस राजेंद्र)

संपादकीय

एस रजनीश कुमार
उप प्रबंधक (राजभाषा)

केआईओसीएल परिवार के एक बिल्कुल नए सदस्य के रूप में आप सभी के समक्ष प्रस्तुत होने पर सर्वप्रथम मैं आप सभी को अपना सादर अभिवादन प्रस्तुत करता हूँ।

इस्पात मंत्रालय के एक उपक्रम के रूप में केआईओसीएल में न हम लौह अयस्कों के प्रसंस्करण के रूप में फौलाद बनाने व पिघलाने का दमखम रखते हैं बल्कि अपने कार्य व्यवहार में भी चुनौतियों को उपलब्धियों में बदलने का हौसला रखते हैं। यह हौसला हमें प्रत्येक मोड़ पर अपनी सक्षमता को सिद्ध करने की प्रेरणा प्रदान करता है। इसी प्रेरणा के वशीभूत होकर हम राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में भी अभिनव प्रयासों के माध्यम से प्रयोक्ता हितैषी टूल्स अर्थात उपकरणों के द्वारा दैनंदिन प्रयोग की कार्यालयीन हिंदी को बेहतर से बेहतरीन बनाने की अथक चेष्टा करते हैं।

अपनी इन्हीं अनथक चेष्टा के रूप में आपके समक्ष राजभाषा विभाग की पहल व टीम केआईओसीएल के समन्वित सहयोग से श्रीगंधा के रूप में राजभाषा ई-पत्रिका के साथ प्रस्तुत हुए हैं।

राजभाषा विभाग के द्वारा जारी हो रही इस ई-पत्रिका के लिए राजभाषा विभाग केवल एक मंच उपलब्ध कराने का कार्य करेगा। मंच को गतिविधियों व उपलब्धियों से भरने का कार्य केआईओसीएल परिवार के प्रत्येक कार्मिक का है। आप अपने अनुभवों से श्रीगंधा के मंच का सार्थक व सकारात्मक उपयोग करेंगे इस बात का मुझे विश्वास है।

प्रवेशांक के लिए निगमित कार्यालय स्तर पर अत्यंत कम समय में कर्मियों का जिस प्रकार से स्नेह व समर्थन मिला उसके लिए मैं हार्दिक धन्यवाद देते हुए बताना चाहता हूं कि आप सभी की रचनात्मक भूमिकाओं से इस अंक की पटकथा निर्मित हुई है। इस अंक में प्रस्तुत रचनाएँ आप सभी का ज्ञानवर्धन करेंगी व लोकरुचि के आलेख आप में हिंदी से प्रेम की धारा प्रस्फुटित करेंगे। अंक में कविताएं भी दी जा रही है और कविताएं सामान्य तौर पर अपने आप में मुकम्मल होती हैं और हजारों शब्दों की बात भी दो लफ्जों की कविता में बयां हो जाती है। उम्मीद है आप सभी को पत्रिका अच्छी लगेगी। अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएं। अब आप सभी से शीघ्र मिलने के वादे के साथ आप सभी का...

रजनीश कुमार

(एस रजनीश कुमार)

हमारी दूरदृष्टि

गुणवत्ता और उत्पादकता के उच्चतम अंतरराष्ट्रीय मानकों, प्रौद्योगिकीय एवं पर्यावरणीय उत्कृष्टता से युक्त विश्वस्तरीय खनन कंपनी के रूप में उभरना और भारत में अनुलाभीकरण एवं पैलेटीकरण उद्योग में अग्रणी बनना और वैश्विक विश्वसनीयता स्थापित करना।

हमारा लक्ष्य

- विश्वास और आपसी अनुलाभों के आधार पर सहज आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित करने के लिए ग्राहकों और पूर्तिकर्ताओं साथ दीर्घकालीन संबंध बनाना।
- नैतिकता और सत्यनिष्ठा के साथ व्यापार।
- कंपनी के उत्पादन केन्द्रों के आस-पास की सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति में सुधार करने का प्रयास करना।
- सतत ज्ञानार्जन करना।
- प्रौद्योगिकी और बदलते वैश्विक परिदृश्य की अनुकूलनशीलता।
- कर्मचारियों को विकास के अवसर, मान्यता और प्रतिफल प्रदान करना।

हमारा उद्देश्य

- विस्तारण और विविधिकरण द्वारा प्रगति।
- नए बाज़ार और अवसरों का पता लगाना।
- प्रक्रमों में परिवर्तन लाते हुए लागत कटौती द्वारा प्रतिस्पर्धा बनाना।
- विविधिकृत कारोबारी यूनिटें बनाते हुए कारोबार के नए क्षेत्रों का पता लगाना।
- ज्ञान, कौशल और अभिवृति में सुधार लाने के लिए कार्मिकों के क्षमता निर्माण में लगातार निवेश करना हमारे मुख्य नैतिक मूल्य।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), बेंगलूरु के संयोजक कार्यालय के रूप में केआईओसीएल का अमूल्य योगदान यात्रा...

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), बेंगलूरु के प्रबंधन एवं संयोजन का कार्यभार विगत चौदह वर्षों से केआईओसीएल लिमिटेड निष्ठापूर्वक निभाती रही। इन वर्षों के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन, राजभाषा संबंधी बैठकों एवं विभिन्न कार्यक्रमों/गतिविधियों का संचालन करने में केआईओसीएल ने अपनी भूमिका/कर्तव्यों को सफलतापूर्वक अग्रणी रुप में निभाया। प्रभावी कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप उत्साहवर्धन करने वाले पुरस्कार हमारी उत्पादकता में वृद्धि करते हैं। इन वर्षों के दौरान नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु को समय – समय पर अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। हमें भारत के माननीय राष्ट्रपति महोदय के करकमलों से राजभाषा में श्रेष्ठ – कार्य निष्पादन के लिए तीन अलग-अलग वर्षों के लिए पुरस्कार तथा दक्षिण क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार भी प्राप्त हुए है।

दक्षिण क्षेत्र में सर्वोतम राजभाषा कार्यान्वयन के लिए केआईओसीएल लिमिटेड के संयोजन में संचालित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) बेंगलूरु को वर्ष 2017-18 के लिए प्राप्त तृतीय पुरस्कार को माननीय राज्यपाल, केरल राज्य, भारत सरकार के करकमलों से ग्रहण करते श्री एम. वि. सुब्बा राव, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, केआईओसीएल लिमिटेड

समय समय पर प्राप्त विशिष्ट पुरस्कार

भारत सरकार के राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा 01 दिसंबर 2019 के प्रभाव से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), बेंगलूरु के संयोजक कार्यालय का दायित्व रक्षा मंत्रालय के नियन्त्रणाधीन सार्वजनिक क्षेत्र के एक उत्कृष्ट उपक्रम भारत इलेक्ट्रॉनिक्स को दिए जाने के उपरांत केआईओसीएल लिमिटेड के विगत चौदह वर्षों के यात्रा के प्रमुख पड़ावों के रूप में यह बताना अत्यंत उल्लेखनीय रहेगा कि यद्यपि अब तक की हमारी नियमित उपलब्धियां व गतिविधियां नराकास (उपक्रम), बेंगलूरू की गृह पत्रिका में प्रकाशित होती रही हैं तथापि एक जिम्मेदार नराकास कार्यालय के रूप में हमने अब तक सक्षमता से दायित्वों का निर्वाह किया है।

वित्त वर्ष के दौरान नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु की दो बैठकों का आयोजन नियमित रूप से किया जाता रहा।

केआईओसीएल लिमिटेड के संयोजन में संचालित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), बेंगलूरु की अर्द्धवार्षिक बैठकों की झलकियां

नियमित अर्द्धवार्षिक बैठकें और प्रेरणा व प्रोत्साहन के रूप में नराकास (उपक्रम) बेंगलूरू की प्रथम बैठक के दौरान नराकास की ओर से प्रत्येक वर्ष राजभाषा के श्रेष्ठ निष्पादन हेतु 5 बडे कार्यालय, 5 छोटे कार्यालय एवं उत्कृष्ट 'गृह पत्रिका' के प्रकाशन हेतु 4 कार्यालयों को प्रशस्ति पत्र एवं शील्ड प्रदान किए जाते रहे।

प्रथम बैठक के दौरान प्रति वर्ष नराकास (उपक्रम) की गृह पत्रिका 'दीपिका' का लोकार्पण और पत्रिका में प्रकाशित लेखकों को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया जाता रहा।

नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु के तत्वावधान में केआईओसीएल लिमिटेड द्वारा हिंदी का प्रगामी प्रयोग सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से 10 वीं की परीक्षा में हिंदी विषय में शत- प्रतिशत अंक हेतु प्रथम 10 छात्र- छात्राओं को नकद पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र एवं शील्ड से सम्मानित करने की परंपरा का सम्यक वहन किया।

जहाँ तक प्रतियोगिताओं की बात है, नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु के तत्वावधान में संयुक्त हिंदी माह के दौरान कुल 18 प्रतियोगिताएँ जैसे- वार्तालाप, अनुवाद, समाचार वाचन, प्रश्नोत्तरी, हिंदी टंकण, प्रशासनिक शब्दावली, ज्ञान सुधा, निबंध, राजभाषा लिखित प्रश्नोत्तरी, श्रुतलेखन, भक्ति/ देश भक्ति गीत, कविता वाचन, वर्ग पहेली, अंताक्षरी, विविधा, टिप्पण आलेखन, चित्रकथा, आशु भाषण आदि आयोजित की जाती रही।

इसके अलावा हिंदी के प्रचार प्रसार के बढ़ावा हेतु नराकास के तत्वावधान में अनुवाद प्रशिक्षण, अभिमुखी कार्यक्रम, तकनीकी सेमिनार, राजभाषा संगोष्ठी एवं सम्मेलन, कवि संगोष्ठी, संयुक्त हिंदी कार्यशालाओं जैसी गतिविधियों का भी आयोजन किया जाता रहा।

केआईओसीएल मानव संसाधनों की दृष्टि से कहें तो अत्यंत सीमित मानव संसाधन संपन्न होने के बावजूद इतनी लंबी अवधि तक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), बेंगलूरु के संयोजक कार्यालय के रूप में सक्षमता से दायित्वों का निर्वाह निष्ठापूर्वक एवं सफलतापूर्वक करता रहा। पूर्व में उपक्रम, भारत सरकार के कार्यालय और बैंक सबका दायित्व एकमात्र नराकास, बेंगलूरु द्वारा वहन किया जाता था। उस रूप में भी केआईओसीएल ने न केवल दायित्वों का सक्षमता से निर्वाह किया वरन अनेकों उपलब्धियों के लिए पुरस्कृत भी हुआ।

दिनांक 17 जुलाई, 2019 को संपन्न वित्तीय वर्ष 2019-20 की पहली बैठक के साथ नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु के संयोजक कार्यालय के रूप में केआईओसीएल लिमिटेड की अंतिम बैठक थी। हम शपथ लेते हैं कि केआईओसीएल संयोजक कार्यालय न होने पर भी सदैव हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु निरंतर अपने सहयोग और दायित्वों का निर्वाह करेंगे साथ ही हम वर्तमान संयोजक भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड को राजभाषा के क्षेत्र में अप्रतिम उपलब्धि हासिल करने की कामना करते हुए आशा करते हैं कि एक सक्षम मार्गदर्शक के रूप में भविष्य में केआईओसीएल को प्रत्येक कदम पर उचित दिशा निर्देश और प्रेरणा प्रोत्साहन प्राप्त होता रहेगा।

हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2019 का समापन समारोह

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं इसके प्रयोग की गति को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 04 सितम्बर से 30 सितम्बर 2019 तक केआईओसीएल लिमिटेड, बेंगलुरू में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ 04.09.2019 को कंपनी के कर्मचारियों के लिए आयोजित निबंध प्रतियोगिता के साथ हुआ।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान कर्मचारियों के लिए हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। दिनांक 30 सितंबर 2019 को संध्या 4.00 बजे हिंदी

पखवाड़ा के समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया था।

कार्यक्रम में परंपरानुसार अतिथियों का स्वागत श्री चंद्रशेखर उरकडे, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने किया।

कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय परंपरानुसार दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। तत्पश्चात एलीन मैथ्यू (वित्त एवं लेख विभाग) द्वारा गणेश वंदना की प्रस्तुति की गई।

कार्यक्रम का आयोजन विधिवत रूप से अतिथियों को पुष्पगुच्छ देने के साथ हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री एम वी सुब्बा राव, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने की।

इस अवसर पर उन्होने अपने सम्बोधन में कहा कि, "हिंदी

हमारी राष्ट्रीय पहचान है, हमारी संस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है।" इसलिए हमें विश्व में अपनी पहचान सुदृढ़ करने के लिए हिंदी भाषा के विकास के लिए कृतसंकल्प होना पड़ेगा। "राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है तथा अधिक से अधिक हिंदी भाषा में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया।" हिंदी भाषा के माध्यम से ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता पर भी बल दिया।

श्री एस राजेंद्र, महा प्रबंधक (मा.सं.) ने माननीय गृह मंत्री का हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर जारी संदेश का पाठ किया। समारोह का संचालन सुश्री चंदा रानी, हिंदी अधिकारी द्वारा किया गया और इस दौरान उन्होंने हिंदी के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रम की संक्षिप्त रूप रेखा भी प्रस्तुत की। उसके पश्चात अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने अपने कर-कमलों से हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियागिताओं के समस्त विजेताओं प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। अंत में श्री शशावली, द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

एक दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी एवं कार्यशाला

केआईओसीएल लिमिटेड द्वारा दिनांक 10 दिसम्बर, 2019 को राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन पर एक दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी एवं कार्यशाला

केआईओसीएल लिमिटेड,बेंगलुरू द्वारा दिनांक 10 दिसम्बर, 2019 को राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन पर एक दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन संपन्न हुआ । जिसकी अध्यक्षता श्री एस. के. गोराई, निदेशक (वित्त) ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, उप निदेशक, एम.एस.ए, इसरो, बेंगलूरु से उपस्थित थे। संगोष्ठी में डॉ. एच. एल. गोपालकृष्ण, उप प्रबंधक (राजभाषा), बीईएल- कॉम्प्लेक्स एवं सदस्य सचिव नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में नराकास (उपक्रम) बेंगलुरु सदस्य कार्यालयों (बीईएल, बीएचईएल, आईओसीएल, मेकॉन, एमएसटीसी, ईएसआईसी, बीएसएनएल, एनटीपीसी, एफ़सीआई, एलआईसी, एचएमटी, एचएएल, एचपीसीएल, एयर इंडिया, एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया) इत्यादि से कुल 30 राजभाषा अधिकारियों एवं केआईओसीएल लिमिटेड से 20 अधिकारियों/ कर्मचारियों ने संगोष्ठी एवं कार्यशाला में सहभागिता की।

केआईओसीएल लिमिटेड के पैलेट ऑडिटोरियम में संगोष्ठी का उद्घाटन सुबह 10.00 बजे गणमान्य व्यक्तियों द्वारा विधिवत तरीके से दीप प्रज्जवलन करके हुआ।

संगोष्ठी में आए अधिकारियों और प्रतिभागियों का स्वागत श्री एस. राजेंद्र, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) ने करते हुए कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रीय पहचान है, हमारी सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है और हमें अपनी संस्कृति की पहचान सुदृढ़ करने के लिए कृतसंकल्प होना पड़ेगा। केआईओसीएल में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के लिए गृह मंत्रालय और इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार से समय-समय पर प्राप्त सभी निर्देशों का पालन किया जाता है। वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केआईओसीएल ने इस राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया है।मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित एम.एस.ए, इसरो, बेंगलूरु से डॉ. अलोक कुमार श्रीवास्तव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, उप निदेशक, ने अपने विशेष संबोधन में कहा कि "हमें अपनी राष्ट्रीय भाषा हिंदी के प्रति अपने कर्तव्यों को बखूबी निभाना चाहिए। हिंदी के महत्व पर प्रकाश

डालते हुए कहा वास्तव में हिंदी में काम करना देशभक्ति है।

निदेशक (वित्त) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए केआईओसीएल अपनी भूमिकाओं को सफलतापूर्वक अग्रणी रूप में निभाता है और हम सभी को हिंदी के प्रचार – प्रसार के लिए अपने – अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए भरपूर योगदान देना चाहिए।

राजभाषा संगोष्ठी एवं कार्यशाला को कुल 2 सत्रों में विभाजित किया गया था। प्रथम सत्र में 3 वक्ता और द्वितीय सत्र में 3 वक्ता थे। जिसमें कुल 6 वक्तव्यों ने राजभाषा के कार्यान्वयन एवं तकनीकी विषयों पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए।

प्रथम सत्र के वक्ता डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, उप निदेशक, यू आर राव सेटेलाइट सेंटर इसरो, बेंगलूरु ने अपने व्याख्यान में चंद्रयान -1 और चंद्रयान -2 की अद्भुत तकनीकी प्रस्तुति का बखूबी वर्णन करते हुए पीपीटी एवं विडियो के माध्यम से पेश किया।

दूसरे वक्ता श्री अशोक कुमार बिल्लुरे, संयुक्त निदेशक (सेवानिवृत्त) थे। उन्होंने विषय "प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी का विकास" के बारे मे विस्तृत जानकारी देते हुए विभिन्न ऐप्स/ वेब एप्लिकेशन जैसे – वॉइस टाईपिंग के बारे में अवगत करवाया और बताया कि भाषा को जीवंत बनाने के लिए हमे प्रौद्योगिकी के साथ बढ़ना होगा।

तृतीय वक्ता श्री रामनाथ शानबाग, सहायक महाप्रबंधक, आईटी, बीएफ़यू, केआईओसीएल लिमिटेड, मेंगलुरु ने अपने वक्तव्य मे "केआईओसीएल लिमिटेड पर तकनीकी प्रस्तुति" को प्रस्तुत करते हुए पैलेट संयंत्र, अनुलाभीकरण संयंत्र, बेनिफिसिएशन प्रक्रिया का फ्लो चार्ट, वीडियो आदि दर्शाया।

दूसरे सत्र के प्रथम वक्ता श्री सौरभ शुक्ला, वैज्ञानिक-ई, डेयर, डीआरडीओ, बेंगलूरु थे जिनका तकनीकी सत्र "सूक्ष्म तरंगें एवं उनके प्रभावी अनुप्रयोग" पर केन्द्रित था। उन्होंने अपने वक्तव्य में सूक्ष्म तरंगों जैसे- चिकित्सा विज्ञान, संचार प्रौद्योगिकी, सुदूर संवेदन, सुरक्षा इत्यादि के प्रभाव उनके अनुप्रयोगों का बखूबी वर्णन करते हुए वीडियो के माध्यम से प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र के दूसरे वक्ता डॉ. जी आर चौधरी, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, डेयर, डीआरडीओ, बेंगलूरु थे। उनका विषय "प्रभावी राजभाषा कार्यान्वयन – प्रौद्योगिकीय एवं व्यवहारिक अनुप्रयोग" था। उन्होंने अपने व्याख्यान में हिंदी ई- टूल्स जैसे- कंठस्थ ट्रांस्लेशन मेमोरी टूल्स, मशीनी अनुवाद (अंग्रेजी से हिंदी), मंत्र – राजभाषा, श्रुतलेखन – राजभाषा (हिंदी स्पीच से हिंदी टेक्स्ट), ई- महाशब्दकोश इत्यादि की विस्तृत जानकारी प्रदान की।

दूसरे सत्र के तृतीय वक्ता केआईओसीएल लिमिटेड, बेंगलुरु से सुश्री चंदा गुप्ता, हिंदी अधिकारी ने केआईओसीएल लिमिटेड में राजभाषा कार्यान्वयन पर प्रस्तुति पेश की और स्पष्ट किया कि केआईओसीएल लिमिटेड द्वारा राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3), राजभाषा नियम 5, राजभाषा नियम 11 एवं राजभाषा नियम 10(4) का सौ प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित किया जाता है। कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए समयान्तराल पर कार्यशालाओं का भी आयोजन किया जाता है और प्रोत्साहित करने के लिए कंपनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में मूल कार्य करने पर नकद राशि से पुरस्कृत किया जाता है।

हम सभी को भी राजभाषा हिंदी के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए अपने- अपने कार्यालयों में दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाना चाहिए। जिससे हिंदी के प्रचार- प्रसार और राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम में अपना अमूल्य योगदान दे सकें।

राजभाषा संगोष्ठी एवं कार्यशाला के अंत में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्री श्रीप्रकाश, सहायक महाप्रबंधक (निगमित एवं संचार विभाग) ने संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए कंपनी के उच्च प्रबंधन को विशेष रूप से धन्यवाद दिया। इसके साथ ही उन्होंने संगोष्ठी एवं कार्यशाला में भाग लेनेवाले सभी प्रतिभागियों को भी

धन्यवाद दिया।

उन्होने स्पष्ट किया कि केआईओसीएल लिमिटेड को राजभाषा विभाग, इस्पात मंत्रालय, नई दिल्ली से समय - समय पर राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए दिशा निर्देशन एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है। इसके लिए केआईओसीएल प्रबंधन राजभाषा विभाग, इस्पात मंत्रालय का तहे दिल से धन्यवाद देता है। उपरोक्त संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन भी राजभाषा विभाग, इस्पात मंत्रालय, नई दिल्ली के मार्गदर्शन के अंतर्गत आयोजित किया गया। जिसके लिए भी केआईओसीएल प्रबंधन उनका हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है।

इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।

- राहुल सांकृत्यायन

नराकास (उपक्रम)

नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु द्वारा नराकास (उपक्रम) के पूर्व संयोजक कार्यालय के रूप में अध्यक्ष - सह- प्रबंध निदेशक एवं महा प्रबंधक (मानव संसाधन) का विशेष सम्मान समारोह

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की द्वितीय बैठक एवं संयुक्त हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह में दिनांक 18 दिसंबर, 2019 को आयोजित समारोह में केआईओसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक का नराकास (उपक्रम) के पूर्व अध्यक्ष के रूप में एवं महा प्रबंधक (मानव संसाधन) का नराकास (उपक्रम) के पूर्व सदस्य सचिव के रूप में नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु को विगत 15 वर्षों से निष्ठापूर्वक एवं सफलतापूर्वक संचालन में उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए नराकास (उपक्रम) के वर्तमान अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), मुख्य अतिथि द्वारा सभागार में उपस्थित सदस्यों की उपस्थिति में विशेष सम्मान किया गया।

इसी क्रम में नराकास की द्वितीय बैठक एवं संयुक्त हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 18 दिसंबर, 2019 के क्रम में केआईओसीएल के बेंगलूरु एवं मंगलूरु कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों के आलेख 'दीपिका के 14वें अंक' में प्रकाशित होने हेतु सुश्री चंदा गुप्ता (हिंदी अधिकारी), श्री एम मुनिराजू (मास्टर तकनीशियन), श्री जनकदेव (निजी सचिव) और श्री षाषावाली (ओसीएम) को नकद पुरस्कार एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया एवं नराकास के तत्वावधान में संयुक्त हिंदी माह प्रतियोगिता के अंतर्गत 'टिप्पण आलेखन' में श्रीमती विजया एस पवाड़े को प्राप्त प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

कार्यालयीन प्रयोग में हिंदी जरूरी क्यों है?

चंद्रशेखर उरकडे

भारत सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को लेकर आज भी दुविधा की स्थिति बनी रहती है। बहुधा ऐसा देखा गया है कि हममें से कुछ लोग इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा न मानकर महज बोझ समझ बैठते हैं और ज़बरन थोपी जाने वाली भाषा मान बैठते हैं। इस कारण, हिंदी सरल और सहज होते हुए भी बोझिल मान ली जाती है। जबकि, हमारी यह अवधारणा सत्य से बिल्कुल परे है। यदि थोड़ी-सी भी रुचि दिखायेंगे तो हम पायेंगे कि हिंदी में काम करना कितना सरल और सहज है! यदि हम अभ्यस्त हो गए तो हम पायेंगे कि रूई के फाहे की तरह इसमें सगुण-दुर्गुण सभी को आत्मसात् करने का विशेष गुण भी विद्यमान है तो आइये, विचार करें कि अपने-अपने कार्यालयों में हिंदी में काम करना आख़िरकार ज़रूरी क्यों है?

हिंदी में काम करना ज़रूरी इसलिए है कि...

हिंदी स्वतंत्र भारतवर्ष के आधे–से-अधिक भू-भाग में बोली जाने वाली भाषा है। यह न केवल बोलचाल की भाषा है बल्कि संवाद का भी एक सशक्त माध्यम है।

हिंदी संविधान-सम्मत भाषा है। यानी, भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भारत की 22 भाषाओं में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भी शामिल है जिसका उल्लेख धारा 343 (1) में हुआ है।

हिंदी केंद्रीय सरकार के मंत्रालय, विभाग, कार्यालय या केंद्र सरकार के स्वामित्व या नियंत्रण वाली किसी निगम या कंपनी या उपक्रम या कार्यालय के बीच पत्राचार का माध्यम है।

हिंदी भाषा के कार्यालयीन प्रयोग के लिए केंद्रीय सरकार के कार्यालयों को 'क', 'ख' एवं 'ग' संवर्ग में बाँटा गया है तथा पत्राचार के लक्ष्य का प्रतिशत क्रमश: 100, 90 और 55 रखा गया है।

हिंदी के प्रयोग के लिए केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों, विभागों एवं कार्यालयों में कई नियमबद्ध प्रावधान हैं, जैसे- राष्ट्रपति का आदेश 1960 (27 अप्रैल, 1960 को जारी); अधिनियम 1963 (1967 में संशोधित) – धारा 3(3), 26 जनवरी 1965 से लागू; राजभाषा संकल्प, 1968 एवं राजभाषा नियम, 1976 (1987, 2007, 2011 में संशोधित)।

हिंदी व्याकरण-सम्मत भाषा है। इसमें 52 वर्ण हैं। इन्हें स्वर और व्यंजन में विभाजित किया गया है। इसकी विशिष्टता यह है कि इसमें मात्रा का विधान है जो भाषा–प्रयोग को सहज बना देता है। हिंदी में 14 स्वर (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अ:,ऋ, ऌ) हैं। 12 स्वर (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अ:) का अधिकतर उपयोग होता है। इनके लिए मात्राएँ निर्धारित हैं। अंग्रेजी में केवल 05 स्वर (a,e,i,o,u) हैं।

हिंदी में उच्चारण का महत्व है जो इसे बिल्कुल स्पष्ट और सुग्राह्य बना देता है। उदाहरण के तौर पर, 'आम' को 'अम' नहीं लिखा जाता और 'अमरूद' को 'आमरूद' नहीं लिखा जाता। इसी तरह, 'सुरुचि' को 'सूरूची' नहीं लिखा जाता, 'स्कूल' को 'स्कुल' नहीं लिखा जाता और 'सुयश' को 'सूअसा' नहीं लिखा जाता।

हिंदी बोलने और लिखने, दोनों में सहज है। 'जितने सहज हैं वर्ण इसके, उतनी सहज है वर्तनी।'

हिंदी में सभी भाषाओं के शब्दों को सहजता से आत्मसात् करने की क्षमता है। यही कारण है कि इसकी शब्दावली में तत्सम, तदभव, देशज और विदेशज शब्द शामिल हैं। यानी, इसमें संस्कृत, हिन्दुस्तानी, अंग्रेजी, अरबी, फ़ारसी, उर्दू इत्यादि अनेक भाषाओं के शब्द शामिल हैं जिनका हम नित्यप्रति प्रयोग करते हैं।

हिंदी कम्प्यूटर में आज कई फॉन्ट उपयोग के लिए उपलब्ध हैं। इनमें 'यूनिकोड' सर्वमान्य है। इसमें अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करने की सहज प्रक्रिया शामिल है, जो हिंदी की मात्राओं यानी शब्द के उच्चारण पर आश्रित है। उदाहरण के तौर पर, हिंदी में अ आ, इ, ई, उ, ऊ, क. ख, ग, घ, ङ आदि शब्दों के लिए अंग्रेजी की-बोर्ड पर a,aa,i,ee,u,oo,k,kh,g,gh,Ng का प्रयोग किया जाता है। इससे हिंदी टंकण में निपुण लोगों के लिए काम आसान तो हो ही जाता है साथ ही, हिंदी टंकण से अनजान लोगों को भी सहजता से काम सीखने का मौका मिल जाता है।

हिंदी आज विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। ऐसा हिंदी के दैनिक समाचार पत्र दैनिक जागरण का मत है। कुछ लोगों का मत है कि चीनी भाषा 'मंदारिन' को बोलनेवाले अधिक हैं और हिंदी द्वितीय स्थान पर आती है। ख़ैर, मामला कुछ भी हो, आज हिंदी पहले की अपेक्षा अधिक स्वीकार्य हो रही है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

हिंदी में साहित्य प्रचुर परिमाण में उपलब्ध है। विज्ञान, कला, वाणिज्य संकाय की पुस्तकें भी हिंदी में उपलब्ध है। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए हिंदी में परीक्षा के प्रश्नपत्र उपलब्ध हैं और उत्तर देने की छूट भी है। वर्ग 'क' एवं वर्ग 'ख' की परीक्षाओं में 'साक्षात्कार' की भी सुविधा हिंदी में उपलब्ध है।

भारतवर्ष की स्वाधीनता में हिंदी लेखकों, कवियों, विचारकों, आलोचकों एवं समाज सुधारकों का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

हिंदी हमारे भरण-पोषण का साधन है। शिक्षण और प्रशिक्षण के माध्यम से यह हमें देश-विदेश में रोज़गार का पर्याप्त अवसर मुहैया कराती है।

हिंदी हितैषी है। हिंदी हमारे हित से लेकर हिन्दुस्तान के हित के लिए हमेशा हमदर्द बनी हुई है।

हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो हमें सार्वजनिक समारोह का अवसर प्रदान करती है - कार्यालय स्तर पर, अंतरकार्यालय स्तर पर, नगर स्तर पर, राष्ट्रीय स्तर पर और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर।

हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो हमें अपने कार्यालय में प्रयोग के लिए वार्षिक वेतनवृद्धि, एकमुश्त लाभ जैसे कई अन्य पुरस्कार से सम्मानित करती है।

हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो हमें आधिकारिक तौर पर टिप्पणी लिखने के लिए लाभ पहुँचाती है।

फिर भी हम इसके प्रयोग में अंग्रेजी की अपेक्षा कम अभिरुचि रखते हैं। यह न सिर्फ़ विरोधाभास है बल्कि हमारे लिए चिन्ता का विषय भी है।

देश के मूर्धन्य लोगों ने हिंदी के योगदान और उपादेयता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। इनमें से कुछ प्रमुख लोगों के विचारों का अगर हम उल्लेख नहीं करते तो यह हिंदी के प्रति हमारे आदर-भाव के विरूद्ध होगा।

1."निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा को मूल।

बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल।।" - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

2."राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।" - राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

3."प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी के प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती।" - सुभाषचंद्र बोस

4."यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।" - लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

5."हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।" -चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

6."जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।" - देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

7."संस्कृत माँ, हिंदी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।" - डॉ. फादर कामिल बुल्के

8."हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है।" – शंकरराव कप्पीकेरी

9."हिंदी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है।" - जॉर्ज ग्रियर्सन

10."हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।" - विलियम केरी

11."संस्कृत माँ, हिंदी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।" - डॉ. फादर कामिल बुल्के

12."आर्थिक युद्ध का एक सूत्र है कि किसी राष्ट्र को नष्ट करने का सुनिश्चित तरीका है, उसकी मुद्रा को खोटा कर देना। (और) यह भी उतना ही सत्य है कि किसी राष्ट्र की संस्कृति और पहचान को नष्ट करने का सुनिश्चित तरीका है, उसकी भाषा को हीन बना देना। (लेकिन) यदि विचार भाषा को भ्रष्ट करते है तो भाषा भी विचारों को भ्रष्ट कर सकती है।" - जार्ज ओर्वेल

13."भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।" - राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

14."भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।" - प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

विश्व के सभी महादेश और देश अपनी भाषा पर गर्व करते हैं, अपनी भाषा का अपने शैक्षणिक और अन्य व्यवस्थाओं में खुले मन से प्रयोग करते हैं तो हम भारतीय भला हिंदी के प्रयोग में ढुलमुल नीति, अनपेक्षित व्यवहार, अड़ियल रवैया, आनाकानी, विरोध और अवरोध का सहारा क्यों लें? इसीलिए हिंदी ज़रूरी है। साथ ही, हिंदी के प्रति अपने मन में अविश्वास पनपने न दें, अराजकता से दूर रहें, अपनापन का बोध जगाएँ, आत्मसम्मान बढ़ाएँ, राष्ट्रहित सर्वोपरि हो, इसका ख़्याल रखें। अनुकरण, अनुसरण, अनुगमन ही अनुचिंतन का अवलम्बन बने। अविजित, अविभाज्य, अखण्ड और अतुलनीय भारत ही हमारा देश हो, यह संकल्प लें।

-चंद्रशेखर उरकडे, वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन)

केआईओसीएल लिमिटेड, बेंगलूरु

समस्या का समाधान

एक बार की बात है एक मल्लाह के पास घास का ढेर, एक बकरी और एक भेड़िया होता है। उसे इन तीनो को नदी के उस पार लेकर जाना होता है। पर नाव छोटी होने के कारण वह एक बार में किसी एक चीज को ही अपने साथ ले जा सकता है।

अब अगर वह अपने साथ भेड़िया को ले जाता तो बकरी घास खा जाती।

अगर वह घास को ले जाता तो भेड़िया बकरी खा जाता।

इस तरह वह परेशान हो उठा कि करें तो क्या करें? उसने कुछ देर सोचा और फिर उसके दिमाग में एक योजना आई।

सबसे पहले वह बकरी को ले कर उस पार गया। और वहाँ बकरी को छोड़ कर, वापस इस पार अकेला लौट आया। उसके बाद वह दूसरे सफर में भेड़िया को उस पार ले गया। और वहाँ खड़ी बकरी को अपने साथ वापस इस पार ले आया।

इस बार उसने बकरी को वहीं छोड़ दिया और घास का ढेर लेकर उस पार चला गया और भेड़िया के पास उस ढेर को छोड़ कर अकेला इस पार लौट आया। और फिर अंतिम सफर में बकरी को अपने साथ ले कर उस पार चला गया।

सीख – मुसीबत चाहे कितनी भी बड़ी हो, खोजने पर समाधान मिल ही जाता है।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

पृथ्वी की आंतरिक संरचना के बारे में कुछ रोचक तथ्य

श्रीप्रकाश

वैज्ञानिकों ने इस सच्चाई को माना है कि धरती का निर्माण साढ़े चार अरब वर्ष पहले ही हुआ होगा। उस समय हमारी धरती का ज्यादातर हिस्सा खौलते हुए लावा जैसा रहा होगा। बाद में जैसे-जैसे लावा ठंडा होता गया, धरती के ऊपरी सतह का निर्माण होता गया।

पृथ्वी की बाह्य स्थलाकृतियाँ उसकी आंतरिक संरचना से घनिष्ठ संबंध रखती हैं। पृथ्वी की आंतरिक संरचना का अध्ययन मुख्यतः भूगर्भशास्त्र का विषय है। चूँकि आंतरिक भाग मानव के लिए दृश्य नहीं है, अतः इसके सम्बंध में जानकारी प्रायः अप्रत्यक्ष साधनों से ही हो सकी है।

इन साधनों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:

1. अप्राकृतिक साधन :

i. घनत्व : पृथ्वी का औसत घनत्व 5.5 है जबकि भू-पर्पटी का घनत्व लगभग 3.0 है। इससे स्पष्ट है कि आंतरिक भागों में घनत्व की अधिकता होगी। घनत्व सम्बंधी विभिन्न प्रमाणों से यह पता चलता है कि पृथ्वी के अन्तर्भाग का घनत्व सर्वाधिक है।

ii. दबाव : अन्तर्भाग के अधिक घनत्व के सम्बंध में चट्टानों के भार व दबाव का संदर्भ लिया जा सकता है। यद्यपि दबाव बढ़ने से घनत्व बढ़ता है, किन्तु प्रत्येक चट्टान की अपनी एक सीमा है जिससे अधिक इसका घनत्व नहीं हो सकता है, चाहे दबाव कितना ही अधिक क्यों न कर दिया जाए। तात्पर्य यह है कि आंतरिक भाग के चट्टान अधिक घनत्व वाले भारी धातुओं से बने हैं।

iii. तापक्रम : सामान्य रूप से प्रत्येक 32 मीटर की गहराई पर तापमान में 10°C की वृद्धि होती है, परंतु बढ़ती गहराई के साथ तापमान की वृद्धि दर में भी गिरावट आती है। प्रथम 100 किमी. की गहराई में प्रत्येक किमी. पर 120°C की वृद्धि होती है। उसके बाद के 300 किमी. की गहराई में प्रत्येक किमी. पर 20°C एवं उसके पश्चात् प्रत्येक किमी. की गहराई पर 10°C की वृद्धि होती है।

विवर्तनिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों में तापमान अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। पृथ्वी के आंतरिक भाग से ऊष्मा का प्रवाह बाहर की ओर होता रहता है, जो तापीय संवहन तरंगों के रूप में होता है। प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के आगमन से यह और भी स्पष्ट हो गया है।

2. पृथ्वी की उत्पत्ति से सम्बंधित सिद्धांतों के साध्य :

ग्रहाणु परिकल्पना जहाँ पृथ्वी के अंतरतम को ठोस मानती है, वहीं ज्वारीय परिकल्पना एवं वायव्य निहारिका परिकल्पना में पृथ्वी के अन्तरतम को तरल माना गया है। इस प्रकार पृथ्वी के आंतरिक भाग के सम्बंध में दो ही संभावना बनती है, या तो यह ठोस हो सकती है या तरल।

3. प्राकृतिक साधन :

i. ज्वालामुखी क्रिया : ज्वालामुखी उद्गार से निकलने वाला तत्व व तरल मैग्मा के आधार पर यह स्पष्ट होता है

कि पृथ्वी की गहराई में कहीं न कहीं ऐसी परत अवश्य है जो तरल या अर्द्धतरल अवस्था में है। यद्यपि ज्वालामुखी के उद्गार से भी पृथ्वी की आंतरिक बनावट के सम्बंध में कोई निश्चित जानकारी नहीं मिल पाती।

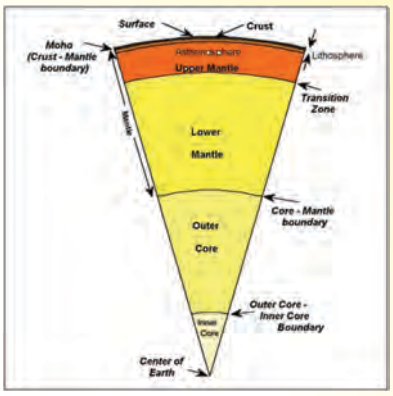

ii. भूकम्प विज्ञान के साक्ष्य : इसमें भूकम्पीय लहरों का सिस्मोग्राफ यंत्र द्वारा अंकन कर अध्ययन किया जाता है। यह ऐसा प्रत्यक्ष साधन है, जिससे पृथ्वी की आंतरिक संरचना के विषय में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध होती है।

पृथ्वी का रासायनिक संगठन एवं विभिन्न परतें:

इंटरनेशनल यूनियन ऑफ जियोडेसी एंड जियोफिजिक्स के शोध के आधार पर पृथ्वी के आंतरिक भाग को तीन वृहद् मंडलों में विभक्त किया गया है, जो निम्न हैं:

भूपर्पटी :

यह ठोस पृष्ठी का सबसे बाहरी तथा मंगुर भाग है जिसमें जल्दी टूट जाने का प्रवृति पाई जाती है। इसकी मोटाई महाद्वीपो के नीचे 30 कि.मी. तक महीसागरों के नीचे इसकी औसतन मोटाई 5 कि.मी. है। भूपर्पटी भारी चट्टानो से निर्मित है तथा इसका घनत्व 3 ग्राम प्रति घन से.मी. है। महासागरों के नीचे भूपर्पटी की चट्टाने बेसाल्ट से निर्मित है।

मैंटल : भूगर्भ में पर्पट्टी के नीचे का भाग मैंटल कहलाता है यह मोहो असांतत्य से आरंभ होकर 2900 कि.मी. की गहराई तक पाया जाता है। मैंटल का ऊपरी हिस्से को दुर्बलतामंडल कहा जाता है। इसका विस्तार 400 कि.मी. तक आँका गया है। ज्वालामुखी के दौरान जो लावा धरातल पर पहुंचता है उसका मुख्य स्रोत यही है। इसका घनत्व भूपर्पटी की चट्टानो से अधिक है, यानी 3.4 ग्राम प्रति घन से.मी. से अधिक भूपर्पट्टी एवं मैंटल का उपरी भाग मिलकर स्थलमंडल कहलाते हैं तथा इसकी मोटाई 10-200 कि.मी के बीच पाई जाती है।

अन्तर्भाग : भूकंपीय तरंगो के वेग ने पृथ्वी के अन्तर्भाग को समझने में सहायता की है। अन्तर्भाग एवं मैंटल की सीमा 2900 कि.मी. की गहराई पर स्थित है। बाह्य अन्तर्भाग तरल अवस्था में है जबकि आंतरिक अन्तर्भाग ठोस अवस्था में हैं। अन्तर्भाग के केन्द्र में घनत्व, यानि लगभग 6370 कि.मी. की गहराई तक यह 13.6 ग्राम प्रति घन से.मी. तक हो जाता है। इससे यह अनुमान लगाया गया है कि इसकी संरचना मुख्यत: निकेल एवं लोहे का बना हुआ होगा। इसे निफे परत के नाम से भी जाना जाता है।

इस प्रकार के कुछ अध्ययनों के आधार पर वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के आंतरिक क्षेत्र के बारे में एक प्रयोगात्मक (डेन्टेटिव) चित्र विकसित किया है। जैसे-जैसे पृथ्वी के आंतरिक भाग से संबंधित नई-नई सूचनाएं प्राप्त होती जाती है पुराने विचारों में सुधार होता जाता है।

-श्रीप्रकाश, सहायक महाप्रबंधक (तकनीकी अधिकारी, समन्वय एवं निगमित संचार)

केआईओसीएल लिमिटेड, बेंगलूरु

भाषा का मानकीकरण एवं हिंदी

चंदा गुप्ता

'मानक हिंदी' हिंदी का मानक स्वरूप है जिसका शिक्षा, कार्यालयीन कार्यों आदि में प्रयोग किया जाता है। भाषा का क्षेत्र देश, काल और पात्र की दृष्टि से व्यापक है। इसलिये सभी भाषाओं के विविध रूप मिलते हैं। इन विविध रूपों में एकता की कोशिश की जाती है और उसे 'मानक भाषा' कहा जाता है। हिंदी में 'मानक भाषा' के अर्थ में पहले 'साधु भाषा', 'टकसाली भाषा', 'शुद्ध भाषा', 'आदर्श भाषा' तथा 'परिनिष्ठित भाषा' आदि का प्रयोग होता था। अंग्रेज़ी शब्द 'स्टैंडर्ड' के प्रतिशब्द के रूप में 'मान' शब्द के स्थिरीकरण के बाद 'स्टैंडर्ड लैंग्विज' के अनुवाद के रूप में 'मानक भाषा' शब्द चल पड़ा। अंग्रेज़ी के 'स्टैंडर्ड' शब्द की व्युत्पत्ति विवादास्पद है। कुछ लोग इसे 'स्टैंड' (खड़ा होना) से जोड़ते हैं तो कुछ लोग एक्सटैंड 'बढ़ाना' से। मेरे विचार में यह 'स्टैंड' से संबद्ध है। वह जो कड़ा होकर, स्पष्टतः औरों से अलग प्रतिमान का काम करे। 'मानक भाषा' भी अमानक भाषा-रूपों से अलग एक प्रतिमान का काम करती है। उसी के आधार पर किसी के द्वारा प्रयुक्त भाषा की मानकता अमानकता का निर्णय किया जाता है।

मानक भाषा को कई नामों से पुकारते हैं। इसे कुछ लोग 'परिनिष्ठित भाषा' कहते हैं और कई लोग 'साधु भाषा'। इसे 'नागर भाषा' भी कहा जाता है।अंग्रेजी में इसे 'स्टैंडर्ड लैंग्विज' कहते हैं। मानक का अर्थ होता है एक निश्चित पैमाने के अनुसार गठित। मानक भाषा का अर्थ होगा, ऐसी भाषा जो एक निश्चित पैमाने के अनुसार लिखी या बोली जाती है। मानक भाषा व्याकरण के अनुसार ही लिखी और बोली जाती है अर्थात् मानक भाषा का पैमाना उसका व्याकरण है। हम जब किसी अपरिचित व्यक्ति से मिलते हैं तो उससे मानक भाषा में ही बातचीत करते हैं, जब हम कक्षा में किसी प्रश्न का उत्तर देते हैं तो हम मानक भाषा का ही प्रयोग करते हैं। हम पत्र-व्यवहार में मानक भाषा ही लिखते हैं। समाचार पत्रों में जो भाषा लिखी जाती है, वह भी मानक ही होती है। आकाशवाणी और दूरदर्शन के समाचार मानक भाषा में ही प्रसारित किए जाते हैं। हमारे प्रशासन के सारे कामकाज मानक भाषा में ही सम्पन्न होते हैं। कहने का आशय यह है कि मानक भाषा हमारे बृहत्तर समाज को सांस्कृतिक स्तर पर आपस में जोड़ती है और हम उसी के माध्यम से एक-दूसरे तक पहुँचते हैं। मानक भाषा हमारी बात दूसरों तक ठीक उसी रूप में पहुँचाती है जो हमारा आशय होता है। अत: मानक भाषा सर्वमान्य भाषा होती है, वह व्याकरण सम्मत होती है और उसमें निश्चत अर्थ सम्प्रेषित करने की क्षमता होती है। गठन और सम्प्रेषण की एकरूपता उसका सबसे बड़ा लक्षण है। यह भाषा सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतीक बन जाती है। धीरे-धीरे इस मानक भाषा की शब्दावली, उसका व्याकरण, उसके उच्चारण का स्वरूप निश्चित और स्थिर हो जाता है और इसका प्रसार और विस्तार पूरे भाषा क्षेत्र में हो जाता है। इस प्रकार मानक भाषा की परिभाषा निम्नलिखित शब्दों में दी जा सकती है:-

"मानक भाषा किसी भाषा के उस रूप को कहते हैं जो उस भाषा के पूरे क्षेत्र में शुद्ध माना जाता है तथा जिसे उस प्रदेश का शिक्षित और शिष्ट समाज अपनी भाषा का आदर्श रूप मानता है और प्राय: सभी औपचारिक स्थितियों में, लेखन में, प्रशासन और शिक्षा के माध्यम के रूप में यथासाध्य उसी का प्रयोग करता है।"

इसी के आधार पर मानक भाषा के लक्षण निश्चित होते हैं:-

- वह व्याकरण सम्मत होती है।
- वह सर्वमान्य होती है।
- उससे क्षेत्रीय अथवा स्थानीय प्रयोगों से बचने की प्रवृत्ति होती है, अर्थात् वह एकरूप होती है।
- वह हमारे सांस्कृतिक, शैक्षिक, प्रशासनिक, संवैधानिक क्षेत्रों का कार्य सम्पादित करने में सक्षम होती है।
- वह सुस्पष्ट, सुनिर्धारित एवं सुनिश्चित होती है। उसके सम्प्रेषण से काई भ्रान्ति नहीं होती।
- वह नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप निरन्तर विकसित होती रहती है।
- वह नये शब्दों के ग्रहण और निर्माण में समर्थ होती है।
- वैयक्तिक प्रयोगों की विशिष्टता, क्षेत्रीय विशेषता अथवा शैलीगत विभिन्नता के बावजूद उसका ढाँचा सुदृढ़ एवं स्थिर होता है।
- उसमें किसी प्रकार की त्रुटि दोष मानी जाती है।
- वह परिनिष्ठित, साधु एवं संभ्रान्त होती है।

इस दृष्टि से आज हिंदी भी एक मानक भाषा है अर्थात् जहाँ-जहाँ हिंदी लिखी या पढ़ी जाती है या पढ़े-लिखे लोग उसका व्यवहार करना चाहते है तो इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह व्याकरण सम्मत हो और उसका व्याकरण वही हो जो सर्वमान्य है।

मानक हिंदी का अर्थ

मानक हिंदी भाषा का अर्थ हिंदी भाषा के उस स्थिर रूप से है जो अपने पूरे क्षेत्र में शब्दावली तथा व्याकरण की दृष्टि से समरूप है। इसलिए वह सभी लोगों द्वारा मान्य है, सभी लोगों द्वारा सरलता से समझी जा सकती है। अन्य भाषा रूपों के मुकाबले वह अधिक प्रतिष्ठित है। मानक हिंदी भाषा ही देश की अधिकृत हिंदी भाषा है। वह राजकाज की भाषा है। ज्ञान, विज्ञान की भाषा है,साहित्य-संस्कृति की भाषा है। अधिकांश विद्वान, साहित्यकार, राजनेता औपचारिक अवसरों पर इसी भाषा का प्रयोग करते हैं। आकाशवाणी व दूरदर्शन पर जिस हिंदी में समाचार प्रसारित होते हैं, प्रतिष्ठित समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में जिस हिंदी का प्रयोग होता है, जिस हिंदी में सामान्यत: मूल लेखन व अधिकृत अनुवाद होता है, वह मानक हिंदी भाषा ही है। मानक हिंदी भाषा, हिंदी के विभिन्न रूपों में सर्वमान्य रूप है। वह रूप पूरी तरह सुनिश्चित व सुनिर्धारित है तथापि इसमें गतिशीलता भी है।

मानक हिंदी की विशेषताएँ

मानक भाषा के जितने लक्षण ऊपर बतलाए गए हैं वे सभी लक्षण मानक हिंदी भाषा में विद्यमान हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार मानक भाषा में चार तत्त्वों का होना आवश्यक है-

मानक भाषा के तत्त्व

(1) ऐतिहासिकता : 'ऐतिहासिकता' का अर्थ है, भाषा की प्राचीन परम्परा और काल की दृष्टि से उसका विकास। अधिकांश भाषाएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक फिर दूसरी से तीसरी तक और ऐसे ही आगे पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती हैं। यही उनकी ऐतिहासिकता है। यह उल्लेख है कि एस्पिरैंतो, इदो, लौंग्लन जैसी कृत्रिम भाषाओं में इस ऐतिहासिकता का अभाव होता है।

(2) मानकीकरण : अर्थात भाषा को एक 'मानक' रूप देना। ऐसा रूप जिसमें प्राप्त सभी विकल्पों में एक को मानक मान लिया गया हो तथा जिस भाषा रूप को उस भाषा के सारे बोलने वाले मानक स्वीकार करते हों। यह बात ध्यान देने की है कि सारे विश्व की अधिकांश समुन्नत भाषाओं का मानक रूप होता है, जबकि अवभाषा (वर्नाक्यूलर), बोली क्रियोल आदि का मानक रूप नहीं होता। मानकीकरण के कारण ही कोई भाषा अपने पूरे क्षेत्र में शब्दावली तथा व्याकरण की दृष्टि से समरुप होती है, इसीलिए वह सभी लोगों के लिए बोधगम्य भी होती है। साथ ही वह सभी लोगों द्वारा मान्य होती है अतः अन्य भाषा रूपों की तुलना में वह अधिक प्रतिष्ठित भी होती है।

(3) जीवंतता : अर्थात भाषा का प्रयोक्ता कोई समाज हो जिसमें बोलचाल तथा लेखन आदि में उस भाषा का प्रयोग होता हो। जीवंत भाषा में निरंतर विकास होता रहता है। विश्व में बोली जाने वाली सभी भाषाओं और बोलियों में जीवंतता मिलती है। हाँ, संस्कृत, लैटिन, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश जैसी पुरानी या क्लासिकी भाषाएँ आज सामान्य प्रयोग में नहीं हैं, इसीलिए उनमें जीवंतता नहीं मानी जा सकती।

(4) स्वायत्तता : स्वायत्तता से आशय है अपने अस्तित्व के लिए किसी भाषा का किसी अन्य भाषा पर निर्भर न होना। सामान्यतः भाषाएँ स्वायत्तता होती हैं, किंतु बोलियाँ स्वायत्त नहीं होतीं; वे अपने अस्तित्व के लिए भाषा पर निर्भर करती हैं। इसीलिए हमें प्रत्येक बोली के लिए यह कहना पड़ता है कि वह बोली अमुक भाषा की है किंतु भाषा के संबंध में ऐसी कोई बाध्यता नहीं है।

इन आधारों को लेकर हम विचार करें तो क्लासिकी भाषा में ऐतिहासिकता होती है, मानकता होती है, किंतु जीवंतता नहीं होती, बोली में मानकता तथा स्वायत्तता नहीं होती, अवभाषा (वर्नाक्यूलर) में मानकता नहीं होती कृत्रिम भाषा में केवल मानकता होती है, पिजिन में मात्र ऐतिहासिकता होती है, क्रियोल में अन्य सभी होती है, किंतु मानकता नहीं होती। मानक भाषा में ये चारो ही विशेषताएँ होती हैं। वस्तुतः स्टिवर्ट की ये बातें यह तो बतलाती हैं कि मानक भाषा में उपर्युक्त चार विशेषताएँ होती हैं, 'किंतु मानक भाषा में मानकता भी होती है' का तब तक कोई अर्थ नहीं, जब तक कि हम यह न बताएँ कि मानकता क्या है।

मानकता के निम्नांकित आधार हो सकते है- (1) मानकता का आधार कोई व्याकरणिक या भाषावैज्ञानिक तथ्य अथवा नियम नहीं होते। इसका आधार मूलतः सामाजिक स्वीकृति है। समाज विशेष के लोग भाषा के जिस रूप को अपनी मानक भाषा मान लें, उनके लिए वही मानक हो जाती है।

(2) इस तरह भाषा की मानकता का प्रश्न तत्त्वतः भाषाविज्ञान का न होकर समाज-भाषा विज्ञान का है।

भाषाविज्ञान भाषा की संरचना का अध्ययन करता है, और संरचना मानक भाषा की भी होती है और अमानक भाषा की भी। उसका इससे कोई संबंध नहीं कि समाज किसे शुद्ध मानता है और किसे नहीं। इस तरह मानक भाषा की संकल्पना को संरचनात्मक न कहकर सामाजिक कहना उपयुक्त होगा।

(3) जब हम समाज विशेष से किसी भाषा-रूप के मानक माने जाने की बात करते हैं, तो समाज से आशय होता है सुशिक्षित और शिष्ट लोगों का वह समाज जो पूरे भाषा-भाषी क्षेत्र में प्रभावशाली एवं महत्त्वपूर्ण माना जाता है। वस्तुतः उस भाषा-रूप की प्रतिष्ठा उसके उन महत्त्वपूर्ण प्रयोक्ताओं पर ही आधारित होती है। दूसरे शब्दों में उस भाषा के बोलनेवालों में यही वर्ग एक प्रकार से मानक वर्ग होता है।

(4) सामान्यत- मानक भाषा मूलतः किसी देश की राजधानी या अन्य दृष्टियों से किसी महत्त्वपूर्ण केन्द्र की बोली होती है, जिसे राजनीतिक अथवा धार्मिक अथवा सामाजिक कारणों से प्रतिष्ठा और स्वीकृति प्राप्त हो जाती है।

(5) बोली का प्रयोग अपने क्षेत्र तक सीमित रहता है, किंतु मानक भाषा का क्षेत्र अपने मूल क्षेत्र के भी बाहर अन्य बोली-क्षेत्रों में होता है।

(6) यदि किसी भाषा का मानक रूप है तो साहित्य में, शिक्षा के माध्यम के रूप में, अंतःक्षेत्रीय प्रयोग में तथा सभी औपरचारिक परिस्थितियों में उस मानक रूप का ही प्रयोग होता है, अमानक रूप या बोली आदि का नहीं।

(7) किसी भाषा के बोलने वाले अन्य भाषा-भाषियों के साथ प्रायः उस भाषा के मानक रूप का ही प्रयोग करते हैं, किसी बोली का अथवा अमानक रूप का नहीं।

'मानक भाषा' किसी भाषा के उस रूप को कहते हैं जो उस भाषा के पूरे क्षेत्र में शुद्ध माना जाता है तथा जिसे उस प्रदेश का शिक्षित और शिष्ट समाज अपनी भाषा का आदर्श रूप मानता है और प्रायः सभी औपचारिक परिस्थितियों में, लेखन में, प्रशासन और शिक्षा, के माध्यम के रुप में यथासाध्य उसी का प्रयोग करने का प्रयत्न करता है।

भाषाओं को मानक रूप देने की भावना जिन अनेक कारणों से विश्व में जगी, उनमें सामाजिक आवश्यकता, प्रेस का प्रचार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास से एकरूपता के प्रति रूझान तथा स्व की अस्मिता आदि मुख्य हैं। यहाँ इनमें एक-दो को थोड़े विस्तार से देख लेना अन्यथा न होगा। उदाहरण के लिए मानक भाषा की सामाजिक आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता। किसी भी क्षेत्र को लें, सभी बोलियों में प्रशासन साहित्य-रचना, शिक्षा देना या आपस में बातचीत कठिन भी है, अव्यावहारिक भी। हिंदी की ही बात लें तो उसकी बीस-पच्चीस बोलियों में ऐसा करना बहुत संभव नहीं है। आज तो कुमाऊँनी भाषी नामक हिंदी के जरिए मैथिली भाषी से बातचीत करता है किंतु यदि मानक हिंदी न होती तो दोनों एक दूसरे की बात समझ न पाते। सभी बोलियों में अन्य बोलियों के साहित्य का अनुवाद भी साधनों की कमी से बहुत संभव नहीं है, ऐसी स्थिति में शैलेश मटियानी (कुमाऊँनी भाषा) के साहित्य का आनंद मैथिली भाषी नहीं ले सकता था, न नागार्जुन (मैथिली भाषी) के साहित्य का आनंद कुमाऊँनी, गढ़वाली या हरियाणवी भाषी। इस तरह सभी बोलियों के ऊपर एक मानक भाषा को इसलिए आरोपित करना, अच्छा या बुरा जो भी हो, उसकी सामाजिक अनिवार्यता है और इसलिए

विभिन्न क्षेत्रों में कुछ मानक भाषाएँ स्वयं विकसित हुई हैं, कुछ की गई हैं और उन्होंने उन क्षेत्रों को काफी दूर-दूर तक समझे जानेवाले माध्यम के रूप में अनंत सुविधाएं प्रदान की हैं। ऐसे ही प्रेस के अविष्कार तथा प्रचार ने भी मानकता को अनिवार्य बनाया है।

-चंदा गुप्ता, हिंदी अधिकारी, राजभाषा विभाग

केआईओसीएल लिमिटेड, बेंगलूरु

हिंदी भाषा के बारे में कुछ दिलचस्प तथ्य

1. हिंदी का नाम फारसी भाषा के 'हिंद' शब्द से निकला है। जिसका अर्थ 'सिंधु नदी की भूमि' है।
2. हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आज दुनिया में हिंदी चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है। दुनिया भर में हिंदी बोलने वालों की संख्या करीब 75-80 करोड़ है।
3. भारत में करीब 77 प्रतिशत लोग हिंदी लिखते, पढ़ते, बोलते और समझते हैं।
4. हिंदी भाषा के इतिहास पर पहले साहित्य की रचना एक भारतीय ने नहीं बल्कि फ्रांसीसी लेखक 'गार्सा द तासी' ने की थी।
5. हिंदी को देवनागरी लिपि में लिखा जाता है। इसे नागरी नाम से भी पुकारा जाता है। देवनागरी में 11 स्वर और 33 व्यंजन होते हैं और इसे बाएं से दाएं ओर लिखा जाता है।
6. हिंदी भाषा को देवनागरी लिपि में 1950 में अनुच्छेद 343 के अंतर्गत राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया है।
7. अंग्रेजी की रोमन लिपि में जहां कुल 26 वर्ण हैं, वहीं हिंदी की देवनागरी लिपि में उससे दुगुने 52 वर्ण हैं।
8. हिंदी (खड़ी बोली) की पहली कविता प्रख्यात कवि 'अमीर खुसरो' ने लिखी थी।
9. हिंदी और दूसरी भाषाओं पर पहला विस्तृत सर्वेक्षण एक अंग्रेज सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने किया था।
10. हिंदी के बारे में एक रोचक तथ्य यह भी है कि हिंदी मूलत: फारसी भाषा का शब्द है।
11. हिंदी भाषा पर पहला शोध कार्य 'द थिओलॉजी ऑफ तुलसीदास' को लंदन विश्वविद्यालय में पहली बार एक अंग्रेज विद्वान जेआर कारपेंटर ने प्रस्तुत किया था।
12. 1977 में तत्कालीन विदेश मंत्री अटल विहारी वाजपेयी ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित किया।
13. 14 सितंबर, 1949 में हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलने के बाद 1953 से पूरे देश में हिंदी दिवस मनाया जाने लगा।
14. हिंदी भाषा के प्रचार के लिए नागपुर में 10 जनवरी 1975 को विश्व हिंदी सम्मेलन रखा गया था। इस सम्मेलन में 30 देशों के 122 प्रतिनिधि शामिल हुए थे। हिंदी के प्रति लोगों की बढ़ती रुचि को देखते हुए साल 2006 के बाद से ही पूरी दुनिया में 10 जनवरी को हिंदी दिवस मनाया जाने लगा।
15. आज भी संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) के 45 विश्वविद्यालय सहित पूरी दुनिया के लगभग 176 विश्वविद्यालयों में हिन्दी की पढ़ाई जारी है। विदेशों में 25 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं है, जो नियमित रूप से हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

नेतृत्व का चमत्कार

एक बौद्ध भिक्षु भोजन बनाने के लिए जंगल से लकड़ियां चुन रहा था कि उसने कुछ अनोखा देखा। उसने एक बिना पैरों की लोमड़ी देखी, जो ऊपर से स्वस्थ दिख रही थी। उसने सोचा कि आखिर इस हालत में ये लोमड़ी जिन्दा कैसे है?

वह अपने विचारो में खोया था कि अचानक हलचल होने लगी। जंगल का राजा शेर उस तरफ आ रहा था। भिक्षु भी तेजी से एक पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ से देखने लगा।

शेर ने एक हिरन का शिकार किया था और उसे अपने जबड़े में दबा कर लोमड़ी की तरफ बढ़ रहा था। उसने लोमड़ी पर हमला नही किया, बल्कि उसे खाने के लिए मांस के टुकड़े भी दे दिए। भिक्षु को यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ कि शेर लोमड़ी को मारने की बजाय उसे भोजन दे रहा है।

भिक्षुक बुदबुदाया। उसे अपनी आँखों पर भरोसा नही हो रहा था। इसलिए वह अगले दिन फिर वही गया और छिप कर शेर का इंतजार करने लगा। आज भी वैसा ही हुआ। भिक्षुक बोला कि यह भगवान के होने का प्रमाण है। वह जिसे पैदा करता है, उसकी रोटी का भी इंतजाम कर देता है। आज से इस लोमड़ी की तरह मै भी ऊपर वाले की दया पर जिऊंगा। वही मेरे भोजन की व्यवस्था करेगा।

यही सोचकर वह एक वीरान जगह जा कर बैठ गया। पहले दिन बिता, कोई नही आया। दूसरे दिन कुछ लोग आए, पर किसी ने भिक्षुक की ओर नही देखा। धीरे धीरे उसकी ताकत खत्म हो रही थी। वह चल-फिर भी नही पा रहा था। तभी एक महात्मा वहाँ से गुजरे और भिक्षु के पास पहुँचे।

भिक्षु ने अपनी पूरी कहानी महात्मा को सुनाई और बोला, आप ही बताए कि भगवान मेरे प्रति इतना निर्दयी कैसे हो गया? किसी को इस हालात में पहुँचाना पाप नही है?

'बिलकुल है', महात्मा जी ने कहा, लेकिन तुम इतने मूर्ख कैसे हो सकते हो? क्यों नही समझते कि ईश्वर तुम्हे उस शेर की तरह बनते देखना चाहते थे, लोमड़ी की तरह नहीं।

जीवन में भी ऐसा ही होता है कि हमें चीजें जिस तरह समझनी चाहिए उसके विपरीत समझ लेते है। हम सभी के अंदर कुछ न कुछ ऐसी शक्तियां हैं, जो हमे महान बना सकती हैं। जरुरत है उन्हें पहचानने की,यह ध्यान रखने की कि कही हम शेर की जगह लोमड़ी तो नही बन रहे हैं।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

"नेतृत्व के लिए तीन चीज़ें आवश्यक हैं नम्रता, स्पष्टता और साहस।"

नेतृत्व दृष्टि को वास्तविकता में अनुवाद करने की क्षमता है।

केड्डस ('केड्डस' अर्थात धरती माता का पूजन)

निवेदिता प्रभु

भारत देश को त्योहारों का देश कहा जाए तो गलत न होगा। यहाँ अनेकता में एकता की झलक खासतौर पर त्योहारों के मौके पर ही देखने को मिलती है। त्योहारों का सिलसिला यहाँ वर्ष भर जारी रहता है। भारत में मनाए जाने वाले त्योहारों की लम्बी सूची है। इसीलिए हम आपको कर्नाटक के, दक्षिण भाग के दक्षिण कन्नड़ जिला में स्थित तुलूनाडू के एक खास अनोखे और प्राचीन त्योहार (उत्सव) के बारे में बताना चाहते हैं।

'केड्डस' यह त्योहार फरवरी महीने के (तुलू में फरवरी माह को पुयिंथेल कहते हैं) मकर मास के 27वें दिन की शाम से कुंभ मास तक (तीन दिन) मनाया जाता है। तुलूनाडू की संस्कृति में धरती (मातृभूमि) को माँ का दर्ज दिया गया है, और उसे विशेष तरह से 'केड्डस' के दिनों में पूजा जाता है। खासकर इन तीन दिनों में कोई भी किसान खेती या कृषि संबंधित कार्यों में शामिल नहीं होते हैं और धरती को चोट पहुँचाने का काम नहीं करते हैं।

'केड्डस' के पहले दिन महिलाएं साथ मिलकर नौ प्रकार के अनाज (नवधान्य) खासकर चना, कुलथी, मूंग, मूंगफली और उबला चावल को भूनती हैं। उसके साथ सूखे नारियल और गुड़ का छोटा- छोटा टुकडा बनाकर डालती हैं, और उसे सबको दिया जाता है इसे तुलू में 'केड्डसदा कुडू अरी' कहते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि सर्दियों

के समय में शरीर को प्रोटीन और तेल की बहुत जरुरत होती है। दाल शरीर को ताकत देकर काम करने की स्थिति में बरकरार रखने में मदद करता हैं।

'केड्डस' के दूसरे दिन को तुलू में 'नडू केड्डस' कहते हैं उस दिन गाँव के जवान (युवा) शिकार पर जाते है। इस लोकाचार का एक पुराना इतिहास है। बहुत साल पहले तुलूनाडू का देव पुरुष यानि 'कोटी और चैन्नाय' दो भाई शिकार पर गए थे, तो उन्हें एक सूअर मिला और उन्होंने उसका शिकार किया और वह सूअर दूसरे गाँव में जाकर मिला। जब 'कोटी और चैन्नाय' वहाँ अपना शिकार लेने गए तो उस गाँव वालों ने हाथापाई शुरू कर दिया। अंत में जीत कोटी और चैन्नाय भाइयों की हुई। लोगो का कहना है कि इस युद्ध के प्रतीक के रूप में लोग आज भी शिकार पर जाते है पर अब वे एक पक्षी का शिकार करते है उसे 'पुंडदा' कहते हैं।

'पुंडदा' पक्षी को इस समय बुखार होता है और वह जड़ी-बूटीयों को खाने के लिए झाड़ियाँ में छिपता है और लोग उसका शिकार करते हैं। इसे तुलू में 'केड्डसदा बोंटें' कहा जाता है।

'कडे केड्डस' केड्डस के तीसरे दिन सुहागन स्त्रियां मिलकर धरती माँ को अलविदा करने के लिए तैयार होती हैं

प्रातः काल वह जल्दी उठकर स्नान करके तुलसी पौधे (पवित्र तुलसी) को पानी देती हैं और तुलसी के सामने आँगन को गोबर से लिपकर एलोवेरा के पत्ते, शिकाकाई पाउडर, नारियल तेल, हल्दी पाउडर, चंदन, कुमकुम, पान के पत्ते, हरे चने का पाउडर रखती हैं और दीप जलाकर पूजा करती हैं।

वे इन सभी पदार्थों को धरती माँ (मातृभूमि) के लिए अर्पित करके धरती माँ के अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करते हैं। यदि धरती माता उपजाऊ रहे तो ही हमें अच्छी फसल और जीने (खाने) के लिए भोजन मिलता है। इसके साथ ही केड्डस त्योहार (उत्सव) सम्पूर्ण हो जाता है।

-निवेदिता प्रभु, वरिष्ठ भंडारी

केआईओसीएल लिमिटेड, मंगलूरु

हंसा एम
वरिष्ठ स्टाफ नर्स (चिकित्सा विभाग)
केआईओसीएल लिमिटेड
बेंगलूरु

ईश्वर की सर्वोत्तम कृति 'नर्स'

वर्षों से देखा सब ने, सुंदर सफेद परिधानों से सज्जित,
सदा अपने अधरों पर लिए, मधुर मुस्कान, वो तरुणाई।
सदा सेवा में तत्पर रहती, जो किसी ने आवाज लगाई,
सिस्टर कहा किसी ने, तो किसी ने नर्स,
कोई कहता नर्स बाई,
वात्सल्य, सेवा, त्याग की मूरत,
सदा करती हैं सबकी भलाई।
जो रक्त देख के रहे निडर,
जन्म-मृत्यु देख न कभी हो घबराई।
माँ सी ममता उड़ेल,
जन्म से रोते बच्चों की बन जाती आई।
मन में प्रेम, कोमलता,
दया के भाव लिए सदा ही वो मुस्कुराई।
प्रेम दिया किसी ने तो
किसी ने उसका अपमान भी किया।
अपनी सेवा में कोई कमी न रख,
हर मरीज को ठीक किया।
हर मरीज के मर्ज से रिश्ता जोड़,
वो मीठे से सुइयां चुभाती है।
कभी प्यार से तो कभी डांट के,
वो कड़वी दवा भी खिलाती है।
जिसका दिल है दयावान,
सेवा भाव से सदा सेवा करती आई है,
अपने दर्द को दिल में छुपा,
मरीजों को देख सदा मुसकाई है।
सदियों से संक्रमण के हर दौर में,
खड़ी सदा करती अगुवाई है।
दूसरों की सेवा करते-करते कुछ ने,
खुद की भी जान गंवाई है।
नमन करता हैं तुम्हें सदा,
ईश्वर ने भी 'नर्स' के रूप में,
सेवा, सुश्रुसा का भाव जगा,
अपनी एक अद्भुत कृति बनाई है।

यक्षगान

रामनाथ शानभाग

यक्षगान, कर्नाटक के प्रसिद्ध कला के रूप में गीत, संगीत, सजावट, नृत्य, बात शब्द, माइम, संयोजन चरण तकनीक सब कुछ थिएटर की अवधारणा की एक पूरी शृंखला में मिलकर संयोजन के रूप में एक पारंपरिक थिएटर का रूप है। यक्षगान इस देश के विभिन्न भागों में मिलने वाले कुचिपुड़ी, वीधिनाटकम, थेरुकूटु, अंकिया नेट, रामलीला, जात्रा जैसे पारंपरिक थिएटर रूपों में से परिवार के एक सदस्य है फिर भी उन सभी से काफी अलग है।

यक्षगान पूरे कर्नाटक में विभिन्न शैलियों और रूपों में प्रचलित है | लेकिन यह तटीय क्षेत्रों में सबसे अधिक जीवित, समृद्ध और जीवंत है। यहाँ यह रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा है। । यक्षगान में दो शैलियां रही हैं। दक्षिणी (तेंकु) और उत्तरी (बडगु) शैलियां पोशाक, नृत्य, संगीत, परंपरा आदि में बदलाव के साथ एक कला के रूप की शाखाओं की तरह है।

यक्षगान संगीत, वेशभूषा, नृत्य और शब्द में एक बहुत अमीर शैली है। इसका इतिहास लगभग 1400 ईसवी पुराना है । इस अवधि के दौरान इसमें कई बदलाव देखा गया है फिर भी अभी तक अपनी विशिष्ट शैली और पहचान को बनाए रखा है। भक्ति आंदोलन की एक शाखा के रूप में उद्भव, के बाद यह समय के विभिन्न बदलाओ के प्रचलन में रहने की इसकी कोशिश जारी है । यक्षगान मंदिर कला, आदिवासी कला, अनुष्ठान, शास्त्रीय कला और समकालीन रूपों से उसके तत्वों को किया जाता है। एक सुंदर और संतुलित संयोजन में उन सभी को बढ़ते हुए यक्षगान शैली और सामग्री में, रंगीन शक्तिशाली और समृद्ध है।

आमतौर पर प्रदर्शन पूरी रात का शो है। पहले भाग यानी पूर्व रंग मंगलाचरण, प्रहसन आदि की तरह प्रारंभिक तैयारियाँ और प्रसंग यानी कहानी रचना विभिन्न रागों (धुन), ताल छंद में रचना की। यह निर्देशक-गायक यानी भागवत गाता है। मद्दले,चंडे दो ड्रम के साथ झांझ और घंटा उनका साथ देती है। पात्र विशिष्ट नृत्य के साथ चरण में प्रवेश करते हैं, नृत्य करते अंगविक्षेप यानि माइम करके बाद में आशु संवादों पेश करते हैं जो बेहद रचनात्मक और कल्पनाशील होते हैं। कहानियों रामायण, महाभारत, देवी भागवत आदि जैसे महाकाव्यों से चुने जाती हैं। मंच पर और साजगृह में प्रार्थना के साथ प्रदर्शन समाप्त होता है।

यक्षगान में लगभग 30 पेशेवर और लगभग 200 शौकिया मंडलियां हैं। लोगों को शिक्षित करने और लोगों का मनोरंजन करने में सदियों से यह कला एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

-रामनाथ शानभाग, सहायक महाप्रबंधक (सिस्टम्स, आई एवं सी)

केआईओसीएल लिमिटेड, मंगलूरु

सौमेन दास गुप्ता
महा प्रबंधक (वित्त)
केआईओसीएल लिमिटेड
बेंगलूरु

परिवार

किरण के उठने से पहले उठती है
प्यार से उठाकर फिर
अपने कर्तव्य मे लगे मेरी माँ!

बिना कहें हर परेशानी
समझ कर उसका हल
निकाले मेरे पिता !

हर सुख- दुख में
चट्टान की तरह
खड़ी रहे मेरी अर्धांगिनी !

जीवन को पूरा बनाते
मेरे बेटा और बेटी !

मेरे सहकर्मी जो मेरे
काम मे है साथ
जीवन के अलग
रंग को लाए मेरे हाथ !

यह है मेरा परिवार
जिस पर है मुझे नाज़ !

अजीत कुमार
सहायक महाप्रबंधक (पीएफ)
केआईओसीएल लिमिटेड
मंगलूरु

प्रवासी

फोन करते वक्त हर पल यही सताता डर,
कहीं माँ फिर से पूछ न ले कब आ रहे हो घर!
यह सिलसिला शुरू हो जाता फिर से साल बीतते ही,
क्योंकि अपनी जिम्मेदारियों,
खर्चों को सहेजते हुए
अब किसी तरह दो- तीन सालों बाद ही
पहुँच पाता हूँ अपने घर।
क्योंकि बच्चे अब बड़े हो गए, डॉक्टर और इंजीनियर बन गए,
पत्नी भी अब उनकी ही तरफदारी करती है,
क्यों जाना है उतनी दूर क्या रखा है वहाँ पर,
क्यों खर्च करना है इतना मगज मारी करती है।
कैसे समझाऊं उन्हें वहां पर मिलने वाली खुशियां,
जिंदगी की आपा धापी से अलग, चैन की जिंदगी, सुकून के पल,
बचपन की यादें, गांव की गलियां, माँ के संग बिताए गए सुकून के चंद दिन,
वर्षों की जिंदगी से है बेहतर।

एन एस रविंद्रनाथ
सहायक महा प्रबंधक (सम) नि (उ एवं परि) सचि.
केआईओसीएल लिमिटेड
बेंगलूरु

स्वच्छता की युक्ति कोरोना से मुक्ति

राष्ट्रपिता का याद करो संदेश
स्वच्छ सुंदर हो भारत देश
स्वच्छता और सफाई है पूजा समान
स्वच्छता को भारतवासी भगवान लें मान
स्वच्छता है एक जिम्मेदारी नहीं केवल विचार
स्वच्छ हो परिवेश हमारा और स्वच्छ आचार
स्वच्छता को बना ले हम अपने जीवन की कुंजी
स्वच्छता नहीं तो शरीर की क्षीण हो जाती पूंजी
निरोगी होकर हम करेंगे देश के लिए कार्य
गंदगी और कचरा पेटी हमें नहीं स्वीकार्य
शुरुआत करें हम स्वयं से, घर से, और घरवालों से
पहुंच स्वच्छता के आकाश पर दूर होंगे गंदे नालों से
स्वच्छता अगर हम अपनाएंगे आएंगे देश के काम
मेडिकल का बिल जीरो होगा बीमारियां भागेंगी तमाम
कंपनी के खर्चे में भी होगी अच्छी खासी बचत
स्वच्छता अपनाने से ना होगी दवाई की कोई खपत
गांठ बांध लें सारे मित्र और प्यारे देशवासी
स्वच्छता के अभाव में ही होती कोरोना जैसी खांसी
कैसी ये बीमारी है जिसने लिया है रूप विकराल
महाप्रलय की आंधी है यह कोरोना महाकाल
छोटे से वायरस से कैसे फैल गया यह यहाँ-वहाँ
स्वच्छता ही इलाज है इसका सुधार लो सारा जहाँ
स्मरण करें फिर बापू का और अपने देश के प्रधानमंत्री का
स्वच्छता के संकल्प से उद्धार हो भारत की बीमार आबादी का
अधूरा सपना हो साकार बापू के नाम का फिर गूंजे जयकार
विश्व के स्वच्छतम देशों में भारत को दुनिया ले स्वीकार
दूर होगा वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और औद्योगिक प्रदूषण भी
ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण कम हो स्वच्छ हो नदियों का जल भी
ग्लोबल वार्मिंग का हो खतरा कम वनों की हो वृद्धि खूब
बाढ़ से आए राहत भारत में नदियों में ना घर जाए डूब
सरल स्पष्ट शब्दों में अपनी बात मैं बतलाता हूँ
विकास के लिए जरूरी स्वच्छता का मंत्र मैं दुहराता हूँ
मेरी बातों को ना कोई माने निरा उपदेश
इसी से खुशहाली होगी और विकसित होगा देश
गंदगी के राक्षस के अब ना होंगे हम गुलाम
कोरोना वायरस भी आ जाए करेंगे उसका काम तमाम
व्यक्तिगत साफ-सफाई का रख पूरा ध्यान हम जागरूकता फैलाएंगे
सफाई का अलख जगाकर पूरी दुनिया में हम छा जाएंगे

एल आनंद मूर्ति
सहायक प्रबंधक (प्रशासन)
केआईओसीएल लिमिटेड
बेंगलूरु

वातावरण

मिलकर आज ये कसम खाते हैं,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाते हैं।
मिलकर आज ये कसम खाते हैं,
प्रदूषण को दूर भगाते हैं।
मानव तूने अपनी जरूरतों के लिए,
वातावरण को कितना दूषित किया है,
फिर भी पर्यावरण ने तुझे सब कुछ दिया है।
प्राणदायिनी तत्वों जल, वायु और मिट्टी से,
हमारे जीवन का उद्धार किया है।
फिर भी मानव पेड़ काटता है,
अपने जीवन को संकट में डालता है।
पर्यावरण न होता तो जीवन मे रंग कहाँ से होते,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाये हमारा प्रथम कर्त्तव्य है।
आओ मिलकर कसम खात हैं,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाते हैं।
आज मिलकर कसम खाते है,
प्रदूषण को दूर भगाते हैं।

"प्रकृति के प्रत्येक रूप में कुछ न कुछ अद्भुत है।"

फ्रांसिस
मास्टर ओसीएम (विधि विभाग)
केआईओसीएल लिमिटेड
बेंगलूरु

सुख और दुख

एक बार एक जोकर सर्कस में लोगो को एक चुटकुला सुना रहा था। चुटकुला सुनकर लोग खूब जोर-जोर से हंसने लगे। कुछ देर बाद जोकर ने वही चुटकुला दुबारा सुनाया। अबकी बार कम लोग हंसे। थोडा और समय बीतने के बाद तीसरी बार भी जोकर ने वही चुटकुला सुनाना शुरू किया।

पर इससे पहले कि वो अपनी बात ख़त्म करता बीच में ही एक दर्शक बोला, "अरे! कितनी बार एक ही चुटकुला सुनाओगे। कुछ और सुनाओ अब इस पर हंसी नहीं आती।"

जोकर थोड़ा गंभीर होते हुए बोला , "धन्यवाद भाई साहब, यही तो मैं भी कहना चाहता हूँ, जब ख़ुशी के एक कारण की वजह से आप लोग बार- बार खुश नहीं हो सकते तो दुःख के एक कारण से बार-बार दुखी क्यों होते हो भाइयों हमारे जीवन में अधिक दुःख और कम ख़ुशी का यही कारण है...हम ख़ुशी को आसानी से छोड़ देते हैं पर दुःख को पकड़ कर बैठे रहते है।

आशय यह है कि जीवन मे सुख-दुःख का आना-जाना लगा रहता है। पर जिस तरह एक ही खुशी को हम बार बार नही महसूस करना चाहते उसी तरह हमें एक ही दुःख से बार-बार दुखी नहीं महसूस करना चाहिए। जीवन मे सफलता तभी मिलती है जब हम दुःखो को भूलकर आगे बढने का प्रयत्न करते हैं।

वसंत कुमार के जे
कनिष्ठ अधिकारी (प्रशासन)
केआईओसीएल लिमिटेड
बेंगलूरु

स्वच्छ भारत का संकल्प

स्वच्छ भारत के स्वप्न को
सबको मिलकर पूरा करना है।
देश कि प्रगति को तो अब
हम भारतवासियों को ही सुनिश्चित करना है।
माना कि मंजिल दूर बहुत है
फिर भी हिम्मत से आगे बढ़ना है।
देश के बच्चों, बूढ़ों को अब
एक ही रफ्तार से आगे चलना है।
साफ हो हर घर, गली, चौराहा
यह बात सुनिश्चित करना है।
देश को खुले में शौच जाने से
अब मुक्ति हमें दिलाना है।
आओ मिलकर संकल्प करें
कि सब कूड़ेदान का ही उपयोग करें।
देश के कोने-कोने को चमका कर
आओ नया इतिहास रचें।
स्वच्छ भारत के एक स्वप्न को
आओ मिल कर साकार करें।
बच्चों को बचपन से ही हम
स्वच्छता का अब ज्ञान दें।
स्वच्छ रहेगा जब अपना भारत
तभी तो स्वस्थ बन पाएगा।
डेंगू, चिकनगुनिया से अब हमको
स्वच्छता ही आजादी दिलाएगा।
स्वच्छता के हैं कई फायदे
जो आजीवन काम आएंगे।
कुछ आपके व्यक्तित्व की आभा बढ़ाकर
तो कुछ देश हित के लिए जाने जाएंगे।
स्वच्छ बनेगा अपना भारत
अब वो दिन ज्यादा दूर नहीं।
जागरूक है देश का अब हर नागरिक
पूरे होंगे स्वच्छता के अभियान सभी।

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।"
- डॉ. राजेंद्र प्रसाद

एम मुनिराजू
मास्टर तकनिशियन (राजभाषा विभाग)
केआईओसीएल लिमिटेड
बेंगलूरु

कृष्ण सोमनहल्ली
कनिष्ठ अभियंता (पी एफ़)
केआईओसीएल लिमिटेड
मंगलूरु

प्रकृति

ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है हमसे
ये हवाओ की सरसराहट
ये पेड़ो पर फुदकते चिड़ियों की चहचहाहट
ये समुन्दर की लहरों का शोर
ये बारिश में नाचते सुंदर मोर
कुछ कहना चाहती है हमसे
ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है हमसे
ये खुबसूरत चांदनी रात
ये तारों की झिलमिलाती बरसात
ये खिले हुए सुन्दर रंग-बिरंगे फूल
ये उड़ते हुए धुल
कुछ कहना चाहती है हमसे
ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है हमसे
ये नदियों की कलकल
ये मौसम की हलचल
ये पर्वत की चोटियाँ
ये झींगुर की सीटियाँ
कुछ कहना चाहती है हमसे
ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है हमसे

कोरोना

सब कहते थे पहले चीन का सामान मत लेना
इससे गुस्सा होकर चीन से आया कोरोना कोरोना
चीन चाहता था भारत अमेरिका सब से जीत जाना
लेकिन भगवान का खेल देखो
चीनी खुद हार रहे है ना
कारण है कोरोना बस सिर्फ कोरोना
अब सारा संसार बोल रहा है
शेक हैंड नही, नमस्ते करोना करोना
खाने में शाकाहार करो, मांसाहार मत करोना
रोज करो तुलसी का पान, धूम्रपान मत करोना
रोज नीम की पत्ती खाओ, मदिरा पान मत करोना
घर का खाना रोज करोना,
फास्ट फूड पिज़्जा छोड़ दो ना
दिन में दस बार हाथ साफ़ करो
कोरोना नजदीक आने न देना,
थोड़ी सी सावधान रख लेना
आस पास में बिमारी न फैला देना,
बहुत खतरा है कोरोना
उसको पास न आने देना
खाँसी हो या छींक मुँह पे
कपड़ा डाल लेना,
वरना पड़ेगा कोरोना से तड़पना
क्योंकि ये है कोरोना, जी हाँ कोरोना

षाषावली
मास्टर ओसीएम (वित्त विभाग)
केआईओसीएल लिमिटेड
बेंगलूरु

देश के युवक

किसी भी देश की आंतरिक स्थितियां का मजबूत होना उतना ही आवश्यक है, जितना की बाहर का। आंतरिक स्थिति से अभिप्राय देश की उस स्थिति से है जिसमें राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक तीनों का समावेश होता है।

यदि यह तीनों स्थितियां सशक्त व अच्छी हैं तो वह देश अवश्य ही विकास करता है। अब प्रश्न यह है कि किस प्रकार से आंतरिक स्थिति को मजबूत किया जाए? हमें कुछ ऐसे लोग चाहिए जो स्थिति को मजबूत बना सकें। देश के नौजवान युवक ही यह कार्य करके देश के भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं। उनका नया जोश, उत्साह की भावना, सभी कार्यों से प्रेरित कराकर एक सफलता की भावना उनमें भर देती है। आज का साहसी युवक ही कल एक नेता या सामाजिक कार्यकर्ता बनेगा। जवाहर लाल नेहरू, गांधी जी, सरदार पटेल व अन्य कई बड़े नेता सभी ने कठिनाईयों का सामना करते हुए देश के स्वाधीनता आंदोलनों में भाग लिया। वे कोई और नहीं अपने समय के साहसी युवक थे। युवकों को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहिए। युवक चाहे किसी भी देश का हो चरित्रहीन है तो वह देश कभी भी विकास नहीं कर सकेगा। किसी भी देश के भविष्य का आधार उस देश के युवक हैं। यदि आधार ही सही नहीं तो इमारत खड़ी नहीं हो सकती।

हर युवक को देश का गौरवमय भविष्य बनाने के लिये सदा तत्पर रहना चाहिए, क्योंकि आज के युवक ही कल के राष्ट्र निर्माता हैं। प्रत्येक भारतीय युवक को अपने देश से प्रेम करते हुए, देश के गौरव को ऊंचा उठाते हुए, अपने कर्तव्यों को भली-भांति समझना होगा तभी भारत देश का भविष्य उन्नत व उज्ज्वल हो सकेगा।

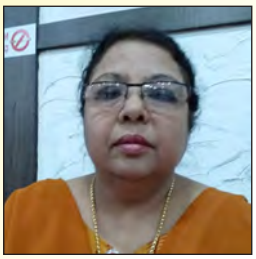

शाहीन ताज
कनिष्ठ अधिकारी
केआईओसीएल लिमिटेड
मंगलूरु

जनकदेव सिंह
निजी सचिव (निदेशक वित्त)
केआईओसीएल लिमिटेड
बेंगलूरु

फ़रियाद

करें फ़रियाद हम किस से,
सभी तो है एक जैसे।
जब रक्षक बन जाये भक्षक,
तो फिर किस से करें फ़रियाद।
कितना कुछ बदल दिया,
हुए जबसे हम होशियार।
कि पहले तरह वो आत्मीयता,
नही बची अब घरों में।
सब के सब लूटने को,
बैठे है तैयार यहाँ पर।
नियत ऐसी हो रही,
हमारे समाज के लोगों की।
फिर किस से आत्मीयता की,
रखे उम्मीदें अब हम सब।
ऐसे माहौल में क्या गाँव,
और क्या शहर बच पाएगा?
कलयुग में सतयुग की उम्मीदें,
हमें रखना बेकार सा लगता है।
जहाँ बेटा- बेटी भी साथ,
छोड़ देते है माँ-बाप का।
कितना कुछ बदल गया है,
इस कलयुगी समाज में।
अब तुम ही बताओ कि,
करें किस से फ़रियाद हम
कि बदल जाए हमारी सोच।

स्वच्छता का सार

स्वच्छता है मानव जीवन का सार,
गंदगी फैलाकर ना करो इसे बेकार।
हमें देश की तरक्की का नया अध्याय लिखना है,
साथ मिलकर स्वच्छता का गुण सीखना है।

देश को स्वच्छ बनाने का लो संकल्प,
स्वच्छता का नही है दूसरा कोई विकल्प।
यदि इस समस्या के लिए आज आवाज ना उठाओगे,
तो कल अपनी आने वाली पीढ़ी को क्या बताओगे ?

प्रदूषण की समस्या का हमें कुछ करना होगा,
इस भयावह समस्या से साथ मिलकर लड़ना होगा।
आओ मिलकर देश में स्वच्छता का बिगुल बजाएं,
साथ मिलकर देश को स्वच्छता के मार्ग पर बढ़ाएं।

किसान और चट्टान

एक किसान था। वह एक बड़े से खेत में खेती किया करता था। उस खेत के बीचो-बीच पत्थर का एक हिस्सा ज़मीन से ऊपर निकला हुआ था जिससे ठोकर खाकर वह कई बार गिर चुका था और ना जाने कितनी ही बार उससे टकराकर खेती के औजार भी टूट चुके थे। रोजाना की भांति आज भी वह सुबह-सुबह खेती करने पहुंचा पर जो पहले से होता आ रहा था एक बार फिर वही हुआ, एक बार फिर किसान का हल पत्थर से टकराकर टूट गया।

किसान बिल्कुल क्रोधित हो उठा, और उसने मन ही मन सोचा की आज जो भी हो जाए वह इस चट्टान को ज़मीन से निकाल कर इस खेत के बाहर फ़ेंक देगा। वह तुरंत गांव की ओर भागा और गांव से 4-5 लोगों को बुला लाया और सभी को लेकर वह उस पत्थर के पास पहुंचा।

पत्थर के पास पहुँच किसान बोला, "भाइयों, ये देखो ज़मीन से निकले चट्टान के इस हिस्से ने मेरा बहुत नुकसान किया है, और आज हम सभी को मिलकर इसे जड़ से निकालना है और खेत के बाहर फ़ेंक देना है।"

और, ऐसा कहते ही वह फावड़े से पत्थर के किनारे वार करने लगा, पर ये क्या! अभी उसने एक-दो बार ही फावड़ा चलाया कि पूरा-का पूरा पत्थर ज़मीन से बाहर निकल आया। साथ खड़े लोग भी अचरज में पड़ गए और उन्ही में से एक ने हँसते हुए पूछा, "क्यों भाई, तुम तो कहते थे कि तुम्हारे खेत के बीच में एक बड़ी सी चट्टान दबी हुई है, पर ये तो एक मामूली सा पत्थर निकला"

किसान भी आश्चर्य में पड़ गया। काफी समय से जिसे वह एक भारी-भरकम चट्टान समझ रहा था दरअसल वह बस एक छोटा सा पत्थर था!! उसे पछतावा हुआ कि काश उसने पहले ही इसे निकालने का प्रयास किया होता तो ना उसे इतना नुक्सान उठाना पड़ता और ना ही दोस्तों के सामने उसका मज़ाक बनता।

इस किसान की तरह ही हम भी कई बार ज़िन्दगी में आने वाली छोटी-छोटी बाधाओं को बहुत बड़ा समझ लेते हैं, और उनसे निपटने की बजाय तकलीफ उठाते रहते हैं। ज़रुरत इस बात की है कि हम बिना समय गंवाए उन मुसीबतों से लडें, और जब हम ऐसा करेंगे तो कुछ ही समय में चट्टान सी दिखने वाली समस्या एक छोटे से पत्थर के समान दिखने लगेगी जिसे हम आसानी से ठोकर मार कर आगे बढ़ सकते हैं।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।
- वी. कृष्णस्वामी अय्यर

मास्ति वेंकटेश अय्यंगार

मास्ति वेंकटेश अय्यंगार : कन्नड़ कथा साहित्य के एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व श्री मास्ति वेंकटेश अय्यंगार अब हमारे बीच में नहीं हैं। उनकी तुलना हिंदी के कथा सम्राट् प्रेमचंद से की जाती है। उन्होंने 'श्रीनिवास' उपनाम से कई सामाजिक और ऐतिहासिक कहानियाँ रची। वे सिर्फ कथाकार ही नहीं, बल्कि उपन्यासकार, नाटककार, कवि सबकुछ थे। एक समय सरकार में आई.सी.एस. अधिकारी रह चुके मास्ति ने सरकारी सेवा से इस्तीफा दिया और अपने जीवन काल में स्वतंत्र लेखन को अपनाया। पूरे कन्नड़ जगत् को अपना प्रेम बरसाया। भारतीय कथा साहित्य को ऐसी अनुपम देन रही कि उनके उपन्यास 'चिकवीर राजेंद्र' को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान कर भारत ने अपना सीना गर्व से ताना।

'श्रीगंधा' के इस प्रवेशांक के साथ कन्नड़ साहित्य के धरोहर लेखकों में से एक के रूप में मास्ति वेंकटेश अय्यंगार के लेखकीय योगदान पर एक संक्षिप्त विवरण के पश्चात उनकी लेखनी से लिखी गई महत्वपूर्ण रचना; "टॉल्स्टॉय के भूर्ज्व वृक्ष" प्रस्तुत है।

इस रचना के माध्यम से टॉल्स्टॉय के अंतिम दिनों के निराशामय जीवन का एक सहज चित्र प्रस्तुत है। इस रचना के माध्यम से मास्ति वेंकटेश अय्यंगार टॉल्स्टॉय के जीवन के अंतिम दिनों में चल रहे अंतर्विरोधों को शब्द देते हैं साथ ही भावलोक की यात्रा कराते हुए पाठकों को एक और सर्वकालिक उत्कृष्ठ लेखक टॉल्स्टॉय के जीवन के वैचारिक अंतर्विरोधों से परिचय कराते हुए चेतना के नए स्तर से साक्षात्कार कराते हैं।

रचना की प्रस्तुति गूगल बुक्स को आभार सहित की जा रही है।

महर्षि टॉलस्टाय के भूर्ज्व वृक्ष

प्रभु टॉलस्टाय ने एक धनवान का बेटा होकर जन्म लिया था तो एक धनवान जवान इनसान का दुर्नीत जीवन जिया था, फिर योद्धा बनकर नाम कमाने के बाद अतिश्रेष्ठ ग्रंथों को रचकर साहित्य केसरी कहलाने की कीर्ति पाई, पैतृक संपदा का मालिक बना, उसे विकसित किया, पारिवारिक जीवन का आनंद उठाया, अपनी अधेड़ उम्र में जीवन से विरक्त बन। इस सीमा तक विरागी बना कि आत्महत्या को ही अपनी शांति का एकमात्र रास्ता माना।

पारंपरिक आस्तिकता पूर्ण परिवार में पले उसने अपनी पढ़ाई के दिनों में वैचारिकता अपनाई, विचिकित्सा में लगकर इस निर्णय पर पहुँचा कि भगवान नहीं है। फिर उसकी समझ में आया कि उस आधार पर जीना भी संभव नहीं होगा, वह इस निर्णय पर पहुँचा कि साधारण से इनसान जैसा जीना ही सही जीवन होगा।

धनवान लोग सुखी जीवन जीते स्वस्थ रहते हैं और अतृप्त होकर कष्ट में फँसे रहते हैं तो वही गरीब होकर मुसीबतों वाला जीवन जीते अस्वस्थ साधारण इनसान उसी को अपना जीवन मानकर खुशी से उसी को स्वीकार कर लेते हैं, प्रभु को लगा कि यही विचार सही है, जीवन ही भगवान है, उसी को मान लेना ही बुद्धिमत्ता है, यही

नित्य निश्चल सत्य है।

प्रभु ने यह सोचा कि इस प्रकार के सरल जीवन को दासता में फँसा कर अपने जैसे धनवान लोग अधिक संख्यावाले लोगों की मेहनत को अपने समान जो कम संख्यावाले लोग हैं, उनके उपयोग के लिए उसका लाभ बाँटते हैं, इस अन्याय को स्थिर बनाने के लिए जायदाद बनाते हैं, और उसकी रक्षा के लिए कानून बनाते हैं, उसको संचालित करने के लिए सावधानी बरतकर स्वयं छोटी संख्या में रहने के बावजूद अपनी ही सरकार बनाते हैं, उस पर राज करने के लिए सेना का इस्तेमाल करते हैं। इस तरह राष्ट्र बने, राष्ट्रों के बीच कुछ लोगों में विवाद हुए, लड़ाइयाँ शुरू हुई, ये सब सभ्यता की बीमारियाँ बनी हैं। इसका अंत होना ही है, बिना इसके मानवजाति की कुशल नहीं, यह प्रभु ने निर्णय किया।

अर्थात् जायदाद मानवजाति के अहित की पहली बीमारी है।

तो फिर, अब और आगे से अपनी पैतृक संपदा का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। अपनी कमाई की जायदाद को भी अपना समझकर नहीं रखना चाहिए। उसने सोचा कि यह जरूरी है कि अपनी लिखी पुस्तकों को अपनी ही मानकर रखना और दूसरों को उसे छापने से मना करना नहीं चाहिए, आगे से किसी भी वस्तु पर स्वामित्व नहीं रखना चाहिए।

इस निर्णय पर पहुँचने के बाद टॉलस्टाय ने कहा कि मैंने हानिकार हर जायदाद का त्याग कर दिया है। इसे लोगों को बताने के लिए उसने उसको प्रकाशित किया, पश्चिमी जगत के आधुनिक युग का वह संत बना देवदूत कहलाया। उसने यह चाहा कि अपनी तरह दूसरे संपन्न लोग भी करें और संसार की हालत को सुंदर बनाएँ। यह सोचकर कि उसी की तरह बहुत से लोग कर सकते हैं, उसे शांति मिली।

संसार के लोगों को इसके शुद्ध मन का परिचय मिला। इसके मन की उदात्तता को भी माना। इसकी प्रशंसा की, मगर ज्यादातर लोगों ने इसके मार्ग का अनुसरण नहीं किया। इस तरह के निर्णय वैयक्तिक हो सकते हैं, किंतु पूरे एक जनसमूह का निर्णय नहीं होता। समझो कि अपनी हथेली के कौर को अपना समझना गलत है, फिर भी कोई बात नहीं, उसे खाया जा सकता है। कैसे ? दूसरों की बात को रहने भी दीजिए, महर्षि के परिवार में ही यह सिद्धांत सौ प्रतिशत चल नहीं पाता था। पैतृक संपदा को मना करो, अपनी जायदाद को मना करो, अपनी पुस्तकों पर स्वामित्व का मानदेय नहीं लो, अपनी कमाई को अपनी नहीं कहो तो फिर घर का दैनंदिन गुजारा कैसे चले ?

अकेले का हो तो कह भी सकता है कि मैं भूखा रह जाऊँगा। तब तक टॉलस्टाय आराम की जिंदगी जीता आया था। उसकी पत्नी सोफिया ताई थी। इनके तीन जवान बेटे, तीन जवान लड़कियाँ थीं। सुखी परिवारों जैसे इन पर आश्रित रिश्तेदार थे। नामी लेखक को जाननेवाले लेखकों का आना - जाना भी होता था। उनमें से कुछ लोग गरीबी के सताए हुए थे, वे सब आदतन रोज खाना खाते, सुखी जीवन जीने के अभ्यस्त हुए थे। इसे कैसे चालू रखें?

प्रभु की पत्नी सोफिया देवी थी। पति कुछ भी कहें उसने सोच लिया कि इस जायदाद और इस कमाई के बिना कोई भी जी नहीं पाता था, पति स्वयं जी नहीं पाता। वह जायदाद को इनकार कर सकता है, मगर मैं कैसे कर

पाऊँगी ? बच्चे कैसे इनकार करेंगे ? ऐसा सोचकर उसने पति द्वारा त्यजे व्यवहार सूत्र को अपने हाथ लिया। महर्षि ने अपने दर्शन का प्रतिपादन किया, उसका अनुपालन करने लगा। अपने पति के विरुद्ध उसने जायदाद को रूढ़ित किया, पति - बच्चे, बंधुओं और अतिथि मित्रों की देखभाल शुरू कर दी।

इन मित्रों में से तीन लोग थे, वे चेटकार्फ, बॉर्की, सूपर - जेट्स के थे। चेट्कार्फ अति कठोर स्वरूप का समतावादी था। उसका भी यह स्थिर मत था कि जायदाद एक समाज को बरबाद करनेवाली व्यवस्था है। टॉलस्टाय द्वारा प्रतिपादित स्वामित्व विरोधवाले वाद को बढ़ावा देनेवालों में से यह प्रमुख था। गॉर्की भी जायदाद के विरुद्ध ही था। उसका यह विचार था कि किसी के पास जायदाद इतनी भी न रहे कि वह उसका दुरुपयोग कर पाए। सूलर जेट्स दोनों तरफ के थे, यानी इसका समर्थन - विरोध करता इनसान था।

प्रभु के निवास के पास ही एक भूर्ज्व वन था। ऐसा लगता है कि उन वृक्षों के अनुकूल वह मिट्टी / जमीन थी। टॉलस्टाय की तरुणाई के दिनों में इसके कुछ पेड़ वहाँ पर थे। टॉलस्टाय ने उन दिनों में उन पेड़ों के लिए सही जगह माना, उसी भावनावाले उत्साह में उस समय उसने उसके एक सौ पेड़ लगवाये। उन्हें बढ़ते देखकर संतुष्ट भी हुआ था। वह जैसे ही जायदाद का मालिक बना उसने उसके साथ और सौ पेड़ जोड़ दिए, उसे सही मायने में एक वन बना दिया। इस बात पर उसे खूब घमंड भी थी। उसके बाद जो भी अतिथि उसके पास आते, वह उन्हें वहाँ ले जाता और वह दिखाकर गर्व के साथ कहता कि ये सब मेरे पाले पेड़ हैं। अब जब उम्र हो गई और बीमार पड़ा, तब भी किसी की सहायता लेकर कभी - कभी वहाँ जाकर देख आता था। जिस दिन वह नहीं जा पाता था, तब वह अपने घर के ओसारे में बैठकर वन की तरफ देखकर खुश होता। पुराणकथा में जो यह कहा जाता है कि एक ऋषि ने जो सब कुछ त्याग दिया था, उसका एक हरिणमृग के साथ दया बनी, वह बाद में मोह में परिणामित हुआ, उसी तरह स्वामित्व अहंकारी, दुष्ट आदि कहलाता, टॉलस्टाय जैसे ऋषि सदृश बने श्रेष्ठ लेखक को इस भूर्ज्व वन के बारे में अनजाने ही एक अपनत्व की भावना और प्रेम भाव ने रूपाकार पाया। घर के खर्च के लिए कभी सोकिया देवी को पैसों की जरूरत पड़ी तो उसने इनमें दस - एक पुराने पेड़ों को बेचना चाहा। वे खूब बढ़कर अब सूखते पेड़ थे। अच्छा दाम मिल सकता था। किसी ने आकर माँगा भी था। टॉलस्टाय को तभी यह बात सुनाई दी। उसने कहा, " छि : ऐसा कैसे होगा ? कैसा वन है यह, पेड़ काटकर उसे बरबाद करोगी ?

"इसे जानकर सोफिया ने यह विचार दूर किया। पति ने पेड़ लगाकर पाला था अब बीमार पड़ा है, पेड़ देख - देखकर आनंदित होता है, कौन जाने, और कितने दिन यह सुख पाता रहेगा, कितनी जल्दी उसका जीवन खत्म हो जाएगा, नहीं कह सकते ; ऐसी हालत में ये पेड़ कटवाकर उसको दु:खी क्यों करूँ ? उसने सोचा।

इसके कुछ ही दिन बाद उस गाँव के मजदूर लोगों ने आकर माँग पेशकर कहा, " हम लोगों में से किसी के पास अपना मकान नहीं है, सोचते हैं छोटे - छोटे मकान बनवा लेते हैं। मालिक से कहकर उस भूज़ वन के पेड़ हमें दिलाइए, हम मकान बना लेते हैं। उन्होंने उदार मन बनाया है, कहते हैं कि उन्हें जायदाद नहीं चाहिए ; कोई भी आकर ये पेड़ काटकर ले जा सकता है, इन्हें हमें दिलाइए।

चेटकॉफ ने टॉलस्टाय को यह बात बता दी। उसने कहा, आप तो जायदाद को मना करते हैं। यह मैं अच्छी तरह

जानता हूँ कि ये आपके सही विचार हैं। इसे सभी को समझाने का यह उपयुक्त अवसर है। इन मजदूरों की विनती की पूर्ति कीजिए।

टॉलस्टाय तुरंत कुछ बोला नहीं। चेर्टकॉफ ने दोबारा यह बात छेड़ी तब उसने कहा, " जब आप जायदाद अपनाने से मना करते हैं तो फिर आदेश देने की क्या बात ? मजदूर हैं, पेड़ हैं। " यह बात उसने खुशी - खुशी नहीं कही थी यह चेर्टकॉफ भी जानता था, फिर भी उसने उसका इस्तेमाल किया, मजदूरों को पेड़ काटने में उसका एतराज न मानते हुए वह आगे बढ़ा।

मालकिन सोफिया देवी को यह बात मालूम हुई। उसने उसको रोककर कहा, " मेरे पति ने ये पेड़ लगाकर उन्हें बढ़ाया है। इस वजह से कटवाने से मन हटाकर मैं चुप रह गई। अब किसी दूसरे को आकर काटने दोगे ? चेर्टकार्फ ने कहा, " ऋषि सदृश तुम्हारे पति की उदारता तुम्हारी वजह से बेकार हो रही है। यह तुम्हारे लिए ठीका नहीं।

उस महिला ने कहा, " मेरे पति की उदारता को फलित करने की इच्छा मुझसे बढ़कर तुम्हारी कैसे हो सकती है ? तुम बहुत बढ़ - चढ़कर बोल रहे हो, यह ठीक नहीं। तुम लोग यहाँ आकर खाना खाते हो, मालिकाना भाव छोड़कर ये सब कैसे निभाएं ? हमारे घर की बात हमें निपटाने दें। तुम्हें इसमें दखल देने की जरूरत नहीं।

" बात बढ़ती गई। झगड़ा ही हुआ। चेर्टकॉर्फ ने सोचा, ' मालकिन सोफिया का दिमाग ही सही नहीं। ' फिर उसने कहा, " इसे कुछ भी कहने ढूँ, मैं तो मालिक के विचारों को चलने दूंगा।

" मजदूर लोग आए। पेड़ काटने लगे। मालकिन ने तनख्वाह देकर दूसरे लोगों को बुलाया, उसने इन लोगों को रोकने की व्यवस्था की। मजदूर लोगों को धक्का लगा। उन लागों ने इसे दुष्ट कहा, निंदा की। सध्य शांत हुए। तनख्वाह पाते लोग लौटे, फिर तुरंत ये लोग लौटे, पेड़ काटे, तना, शाखा, छाल सबको काटकर ले गए।

दस बार इन्होंने इस तरह किया, दस बार उसने रोका, इस तरह दस महीने बीतते - बीतते भूज़ वन जमीन के साथ पट गया। वन के अस्तित्व के भूतकाल की पहचान में आरे से कटे छूटे पेड़ की जड़ मात्र बची थी। ये सब चल रहे थे, तब टॉलस्टाय ने कुछ भी नहीं कहा। सोफिया देवी समझ गई कि टॉलस्टाय चाहते हैं कि पेड़ बचे रहें। मगर उसकी सारी कोशिशें बेकार गई। वह खुद पगला गई। टॉलस्टाय एक अबोले दर्द से तड़प गया, घुल गया।

उसके कुछ महीने बाद एक दिन वह किसी से बिना बताए कहीं चला गया। उसके निकल जाने के बाद घर के बच्चों को यह बात पता चली। उन्होंने लोगों को उसे ढूँढ़ने में लगाया। उन लोगों ने उसे एक रेलवे स्टेशन पर देखा। टॉलस्टाय तब तक खूब थक गया था। वह स्टेशन पर ही रुका रहा। उसे वहाँ रुका जानकर कई लोग आए। उन लोगों ने उसे दूसरी जगह ले जाना चाहा। उसके कार्यान्वयन से पहले ही वह स्टेशन पर ही गुजर गया।

उसे पेड़ों के कटने का दुःख था ? या अपनी उदारता पर पत्नी के रोड़ा अटकाने का दुःख था ? इस बात की चिंता भी कि मालिकाना भाव को इनकारते उसे पेड़ के साथ अपनत्व के भाव की पीड़ा थी। उसके प्राण इन भावों में से किसमें घुलते खत्म हुए ? या तो तीनों भावों से जुड़कर मन में द्वंद बना ? उसे अब कोई भी नहीं कह पाता।

-श्रीगंधा फीचर डेस्क

KUDREMUKH

केआईओसीएल लिमिटेड

II ब्लॉक,कोरमंगला

निगमित कार्यालय, बेंगलूरु - 560034

रूपरेखा विन्यास -सूचना प्रौद्योगिकी विभाग